जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 16वां

सितंबर 2021



राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता



दि. 10/09/2021 को यार्ड 12653 की परियोजना 17ए के कील लेईंग समारोह में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) संबोधित करते हुए



एमडीएल पत्रिका "जलतरंग" को 16 जुलाई 2021 को संपन्न टॉलिक की जूम मीटिंग में वर्ष **2020-21** के लिए उत्कृष्ट गृहपत्रिका का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया । राजभाषा शील्ड के साथ निदेशक (वित्त), श्री संजीव सिंघल, श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा) के साथ राजभाषा कर्मचारीगण

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि)

मुख्य परामर्शदाता

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक मण्डल

श्री अरुण कुमार चान्द, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)
श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)
श्री पी डी सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा)
सुश्री जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
डॉ. सुमेध के हाडके, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुद्रक

रेखा प्रिन्टर्स
7, गांवदेवी दर्शन, ब्रम्हदेव खोत मार्ग,
डॉकयार्ड रोड, माझगांव, मुंबई – 400010.

प्रकाशक

राजभाषा अनुभाग
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,
डॉकयार्ड रोड, मुंबई – 400010.
फोन – 22-23710456

विषय-सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 3

निदेशक (वित्त) का संदेश 4

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश 5

संपादकीय, महाप्रबंधक (मा. सं. एवं क. सं.) 6

जहाज निर्माण की प्रक्रिया 7

पी. डी. सिद्दीकी, उप प्रबंधक (राजभाषा)

नया एसएसए वर्कशॉप 10

रामप्रीत यादव, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

कंपनी संस्कृति का महत्व 13

सत्यनारायण प्रधान, अमप्र (मा.सं.-समवाय एवं एमडीसी)

डिजिटल युग में कंप्यूटर अनुवाद का योगदान 17

डॉ. सुमेध के. हाडके, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

बात 26

सुश्री जयंतिका मुखर्जी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

स्टार्टअप इंडिया 28

रविंद्र जाधव, इलेक्ट्रिशियन, एस बी - इलेक्ट्रिकल

वर्तमान में अनुवाद कार्य की आवश्यकता और महत्व 32

डॉ. महेंद्र जैन मुकुर

भाषा-प्रौद्योगिकी का स्वरुप 36

कुंदन सिंह, कार्यालय अधीक्षक

नई शिक्षा नीति 39

लक्ष्मण अर्जुगडे, लिपिक, मा. सं. - अधिकारी

संक्रमण की त्रासदी 41

प्रकाश चंद्र झा, उप महाप्रबंधक (जनि-कार्य)

व्यवस्थापन विकास केंद्र-एमडीएल की ज्ञानगंगा ... 43

प्रसाद कुलकर्णी, व्यवस्थापन विकास केंद्र

इंसानियत 46

काले खान, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

ब्लैक फंगस 48

कु. लक्ष्मी सिमनलाल आर्य, फिजियोथेरेपिस्ट (बीपीटी)

ट्रैकिंग : रोमांचकपूर्ण भ्रमण 50

अमित कुमार, प्रबंधक, क्रय विभाग

श्यामा प्रसाद मुखर्जी 52

जसबिंदर सिंह, प्रबंधक (पूर्व खंड - योजना)

ऐ वतन तेरे लिए 54

एच एस शेख, आफिस - स्टाफ

दूर देश में गांधी जी 55

मोहन नारायण कारेकर, कार्यालय अधीक्षक

दीवान की धर्मनिष्ठा 56

सुश्री श्रेया तोरस्कर, डेटा इंट्री ऑपरेटर, राजभाषा

ब्रह्मांड के रहस्य 57

लाल साहब सिंह, मुख्य प्रबंधक (जनि-पाइप शॉप)

फौजी का जवाब 58

आशीष सुभाष पंडित, स्ट्रक्चरल फैब्रिकेटर, ईस्ट यार्ड हल

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक कार्यकारी निदेशक

'एचआर लीडरशिप पुरस्कार' से पुरस्कृत 59

विश्व आदिवासी दिवस समारोह 60

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियाँ 61

इस पत्रिका में दिये गये लेखकों के विचार से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से .....

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा गृहपत्रिका "जलतरंग" के 16वें अंक के प्रकाशन पर हमें अति प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका में विशेष रुप से अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लेख, कविता, गजल, अन्य रचना तथा एमडीएल उत्पाद, समारोह और विभिन्न कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है।

"राष्ट्र के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता" और "अग्रणी शिपयार्ड" होने के नाते प्रबुद्ध पाठक रक्षा संबंधी उत्पाद की जानकारी को बड़े ही जिज्ञासा के साथ पढ़ते हैं और तकनीकी जानकारी ग्रहण करते हैं। हमारा प्रयास रहता है कि एमडीएल गतिविधियों की अद्यतन जानकारी लोगों तक पहुंचे। उन्हें यह जानकारी होना चाहिए कि देश की रक्षा के लिए हम आत्मनिर्भर हैं और किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं।

राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" को प्रथम अंक से अब तक 55 संस्थानों की मुंबई उपक्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं। 16 जुलाई 2021 को संपन्न 67वीं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में "जलतरंग" के 15वें अंक को ऑनलाइन प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी प्रकार "जलतरंग" को वर्ष 2015 और 2016 में क्रमशः कीर्ति प्रथम एवं कीर्ति द्वितीय पुरस्कार महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया जो "जलतरंग" के गुणवत्ता को दर्शाता है। इसके अलावा लगातार "स्कोप" से राष्ट्रीय स्तर का प्रथम पुरस्कार एवं अन्य "हिंदी संस्थानों" से "जलतरंग" को प्रथम पुरस्कार प्राप्त होते रहे हैं। कोरोना काल में जलतरंग को ई-पत्रिका के रुप में प्रकाशित किया गया जो सराहनीय है।

राजभाषा कार्यान्वयन में भी एमडीएल ने काफी प्रगति की है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2020-21 में निर्धारित पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। कोविड-19 के संबंध में जारी केंद्र एवं राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा 2021 का आयोजन किया गया जिसमें बड़े ही हर्षोल्लास से अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया जो हिंदी के प्रति लगाव को दर्शाता है। सभी भारतवासियों को हिंदी की प्रगति के लिए प्रयास करना हमारा कर्तव्य एवं दायित्व है।

मैं उम्मीद करता हूँ कि राजभाषा गृहपत्रिका "जलतरंग" का यह अंक आशाओं के अनुरुप खरा उतरेगा और पाठकों से बेहतर प्रकाशन के लिए सुझाव प्राप्त होगें।

शुभकामनाओं सहित.....

नारायण

वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



निदेशक (वित्त) का संदेश .....

मुझे राजभाषा गृहपत्रिका "जलतरंग" के माध्यम से आप को संदेश देते हुए अपार खुशी हो रही है। एमडीएल कर्मचारियों के द्वारा हिंदी में इतनी सुंदर पत्रिका प्रकाशित करना अवश्य ही सराहनीय है। अपनी भाषा के प्रति लगन और अनुराग, राष्ट्र प्रेम का ही एक रुप है। हिंदी एक सरल भाषा है और इसकी यह विशेषता है कि - **'जो बोला जाता है वही लिखा जाता है'**।

हिंदी हमारी राजभाषा है और देश में राजभाषा और संपर्क भाषा के रुप में इसका प्रयोग किया जाता है। हिंदी का विकास और इतिहास विस्तृत एवं विशाल है। इसकी प्रगति में देश के असंख्य लोगों का चिंतन और मनन शामिल है। हिंदी आज देश के जन-मन-गण की भाषा है और देश का गौरव है।

एमडीएल में राजभाषा अधिनियम, संकल्प और नियम के दिशा निर्देशों का अनुपालन किया जाता है। भाषायी वर्गीकरण के अंतर्गत एमडीएल 'ख' क्षेत्र में स्थित है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एमडीएल सतत प्रयत्नशील है।

एमडीएल में गृहपत्रिका के प्रकाशन की शुरुआत वर्ष 2014 से आरंभ हुई। यह अर्धवार्षिक पत्रिका है जो मार्च और सितम्बर में प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है। वर्ष 2014 से आज तक इस पत्रिका ने एमडीएल के सम्मान और गौरव में चार चाँद लगाये हैं।

"जलतरंग" के 16वें अंक में हमने अद्यतन सरकारी नीतियों, विभिन्न लेखों, कविताओं आदि को स्थान दिया है। सभी कर्मचारियों के सहयोग से पत्रिका की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए भरपूर प्रयास किया गया है। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि हमारी गृहपत्रिका "जलतरंग" के उत्कृष्टता के लिए सराहना मिलेगी और विविधता और नवीनता के लिए सम्मानित किया जाएगा।

मैं, राजभाषा अनुभाग के प्रयास की सराहना करता हूँ कि बेहतरीन पाठ्य सामग्री को पत्रिका में शामिल किया गया है। मैं पुनः पत्रिका के विस्तार और प्रसार के लिए मंगलकामना करता हूँ।

श्री संजीव सिंघल
निदेशक (वित्त)



कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश ...

राजभाषा गृहपत्रिका "जलतरंग" के प्रकाशन का मुख्य ध्येय माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स में हिंदी की प्रगति करना है। इस पत्रिका में हमारे कर्मचारियों से कविता, कहानी, लेख और अन्य प्रकार के रचना आमंत्रित किए जाते हैं। हमारा हर संभव प्रयास रहता है कि "जलतरंग" का प्रकाशन उच्च कोटि का हो ताकि राष्ट्रीय स्तर पर इसको मान्यता मिल सके।

हम इस बार "जलतरंग" पत्रिका का 16वां अंक का प्रकाशन कर रहे हैं। राजभाषा पत्रिका "जलतरंग" के प्रकाशन से मैं ओतप्रोत से जुड़ा हुआ हूँ। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि एमडीएल परिवार के सभी सदस्य "जलतरंग" पत्रिका के माध्यम से अपनी सोच-विचार, प्रतिभा और ज्ञान-विज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करें। प्रतिवर्ष राजभाषा पत्रिका को विभिन्न संस्थानों से पुरस्कार प्राप्त होता रहा है और हम प्रयासरत हैं कि यह सिलसिला आगे भी जारी रहें। मेरे मार्गदर्शन में राजभाषा पत्रिका दिनोदिन प्रगति, उन्नति और नवीन प्रयोग पथ पर है।

हालांकि कोविड-19 महामारी से हमारी गति में थोड़ी खलल अवश्य पड़ी पर आज हम उससे उभरकर आगे बढ़ चुके हैं। देश और जनमानस के स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए हमने समय पर एमडीएल परिवार के सभी सदस्यों का मुफ्त टीकाकरण व्यवस्था की और लोगों में जागरुकता का प्रचार किया।

आगे, राजभाषा गृहपत्रिका में कंपनी के उत्पाद से जुड़े विभिन्न लेखों और रचनात्मक विधाओं से संबन्धित जानकारियों का समावेश किया गया है। हमने इसकी भाषा सरल और शैली सुबोध रखने का प्रयास किया है। पाठक के ज्ञानवर्धन का ध्यान रखते हुए सामग्री का चयन किया गया है। सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी यथासंभव देने की कोशिश की गई है। पाठक वर्ग को इन सभी लेखों, योजनाओं और सुविधाओं से लाभ पहुंचाना ही हमारे पत्रिका का ध्येय है।

एमडीएल राजभाषा नियमों का अनुपालन करते हुए, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पुरा करने के लिए प्रयासरत रहता है।

डॉ संतोष कुमार मल्लिक
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)



संपादकीय ....

मुझे "जलतरंग" पत्रिका का संपादकीय लिखते हुए सुखद अनुभूति हो रही है। यह एमडीएल की सफल राजभाषा पत्रिका है जिसे राजभाषा विभाग और मुंबई (उपक्रम) नरकास की ओर से अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड देश का प्राचीन एवं मुख्य शिपयार्ड है जो मुंबई के पूर्वी तट पर स्थित है। 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने जहाजों के मरम्मत के लिए सूरत में एक गोदी का निर्माण किया था। अंग्रेजों से पुर्तगालियों का संबंध जुड़ने के बाद मुंबई गोदी का विकास पारसी जहाज निर्माताओं के माध्यम से विकसित हुआ। विभिन्न मालिकों से होते हुए भारत सरकार ने 14 मई, 1960 को माझगांव डॉक का अधिग्रहण किया।

बुनियादी ढांचा तो बहुत पहले ही था उसे निखारने का काम निरंतर कई दशकों तक चलता रहा। जहाज निर्माण उद्योग में एमडीएल का अनुभव 200 वर्षों से अधिक है।

हमारी कंपनी का "राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता" के रुप में अग्रणी भूमिका है। आज के प्रतिस्पर्धी बाजार में एमडीएल ने गुणवत्तापूर्ण जहाजों की समय पर सुपुर्दगी को बरकरार रखा है। प्रशिक्षित कार्मिकों के साथ पोत मरम्मत और रिफिट कार्य प्रगति पर है।

प्रस्तुत अंक में कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विविध लेखों का समावेश किया गया है, जिसमें कंपनी संस्कृति का महत्व, राष्ट्रीय एकता और राजभाषा, भाषा प्रौद्योगिकी का स्वरुप, कंप्यूटर अनुवाद और हिंदी पखवाड़ा आयोजन के बारे में पठनीय सामग्री दी गई है। पाठकों की रुचि का ध्यान रखते हुए पठनीय सामग्री का चयन किया गया है, राजभाषा से संबन्धित नियमों का अनुपालन कर निरंतर पत्राचार के लक्ष्य को आगे बढ़ाने का प्रयास जारी है। आशा करता हूँ कि सभी कर्मचारी एवं पाठकों को इस अंक में ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने को मिलेंगे।

श्री अरुण कुमार चान्द

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)



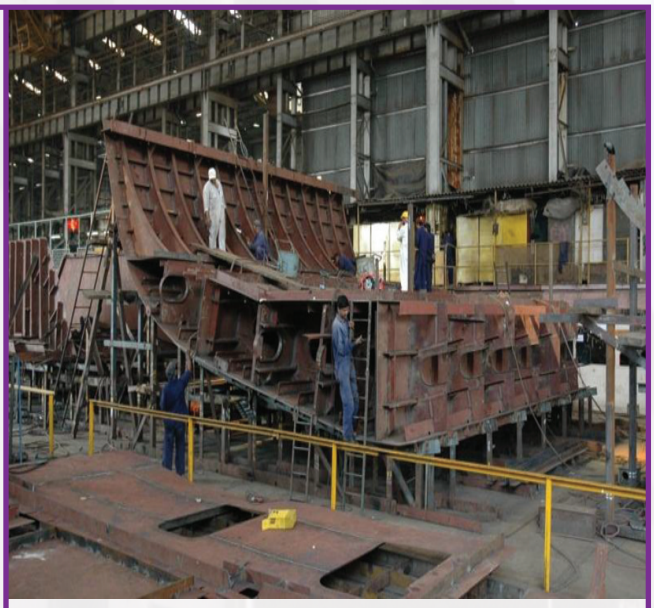
पी. डी. सिद्दीकी
उप प्रबंधक (राजभाषा)

जहाज निर्माण की प्रक्रिया

निर्माण कार्य आरंभ करने से पहले जहाज का आरेखन तैयार किया जाता है तथा विभागों/मंत्रालयों से आरेखन का अनुमोदन प्राप्त होने के बाद बुनियादी कार्य कंपनी के अलग-अलग विभागों में शुरु किया जाता है। आरेखन की प्रक्रिया के बाद, उसके अनुसार प्लेट की कटाई की जाती है। पाइपों को मोड़ने के लिए अति आधुनिक मशीन पाइप शॉप में लगाई गई है।



उत्पादन शाला में प्लेट काटने की मशीन का चित्र



उत्पादन शाला में जहाज निर्माण के जोड़ने की प्रक्रिया

दक्षिण यार्ड स्थित उत्पादन शाला में आरेखन के अनुसार जहाज के विभिन्न हिस्सों को जोड़ा जाता है। छोटी-छोटी ईकाईयों को जोड़ने के बाद पूरी ईकाई को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर रखा जाता है। पूरी यूनिट का ढांचा तैयार होने के बाद इन्हें आपस में जोड़ा जाता है।



कील डालने के अवसर पर तैयार यूनिट के सामने हिन्दू परंपरा के अनुसार पूजा करते हुए पुरोहित एवं उपस्थित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण ।



तैयार इकाई को जोड़ने के लिए क्रेन से ले जाते हुए ।



तैयार जहाज की एक इकाई का आंतरिक दृश्य



पूरे जहाज का ढांचा तैयार होने के बाद अगले हिस्से के ऊपरी भाग को जोड़ने के लिए क्रेन से ले जाते हुए ।



पूरे जहाज का ढांचा तैयार होने के बाद स्लिप-वे के नजदीक जलावतरण समारोह का आयोजन किया जाता है ।

पूजा अर्चना करने के बाद मुख्य अतिथि के सम्बोधन के पश्चात जहाज का नामकरण किया जाता है तथा मुख्य अतिथि के द्वारा जलावतरण के लिए पूश बटन को दबाकर जहाज को पानी में उतारा जाता है । इस अवसर पर माझगांव डॉक के अलावा नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी तथा एमडीएल के कर्मचारी एवं कामगार उपस्थित रहते हैं ।



जलावतरण के बाद स्लिप-वे से समुद्र में सरकती हुई जहाज का चित्र ।



जहाज के समुद्र में पहुँचने पर उसे टग द्वारा खींच कर वेट बेसिन में लाया जाता है जहाँ जहाज की आंतरिक सज्जा एवं बाहरी सज्जा की जाती है ।

यह वेट बेसिन पूर्व खंड के सामने समुद्र में बनाया गया है जिसके दोनों तरफ रेल पटरी पर चार लफ़्फ़िंग क्रेन लगाए गए हैं जिनका उपयोग जहाज में सामग्री पहुँचाने के लिए किया जाता है । यही पर जहाज पूर्ण रुप से तैयार होते हैं तत्पश्चात इनका परीक्षण समुद्र में ले जाकर किया जाता है । सभी परीक्षण सफल होने पर जहाज की सुपुर्दगी भारतीय नौसेना को की जाती है ।



रामप्रीत यादव
सहायक प्रबंधक, राजभाषा

नया एसएसए वर्कशॉप



अलकॉक यार्ड में ओएनजीसी के जैकअप रिग, प्रतितट मंच का कार्य समाप्त होने के पश्चात कोई नया ऑर्डर नहीं मिला और यार्ड के उपकरणों और मशीनरी का उपयोग नहीं हो रहा था। इसलिए उस बड़े भूभाग का समुचित उपयोग करना जरुरी था। पूर्व खंड में पनडुब्बी निर्माण के लिए स्थान की कमी को देखते हुए प्रबंधन ने योजना बनाई कि अलकॉक यार्ड की खाली जमीन का उपयोग पनडुब्बी निर्माण हेतु बुनियादी सुविधा का विकास करने के लिए किया जाए। कंपनी को नौसेना से 06 स्कॉर्पिन पनडुब्बी निर्माण का ऑर्डर मिला हुआ है उन्हें समय से पुरा करना आवश्यक है क्योकि इस योजना पर कार्य विलंब से आरंभ हुआ है। बुनियादी संसाधनों की सहायता से निर्माण अवधि तथा लागत में कमी होगी जिससे भविष्य में और ऑर्डर प्राप्त होंगे। कार्य प्रचुरता तथा भावी योजना का विचार करते हुए अलकॉक यार्ड में पनडुब्बी निर्माण हेतु आधारभूत संरचना के रुप में सबमरिन सेक्शन एसेम्बली कार्यशाला का निर्माण किया गया है।



माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड को भारतीय नौसेना की ओर से 06 स्कॉर्पिन श्रेणी पनडुब्बियों के निर्माण का ऑर्डर परियोजना पी75 के अंतर्गत दिया गया है। एमडीएल के पास पहले से ही पूर्व खंड में सबमरीन एसेम्बली के लिए ड्राई डॉक से सुसज्जित कार्यशाला है। फिर भी यह सुविधा भारतीय नौसेना के लिए पनडुब्बी निर्माण समय सीमा में तैयार करके सुपुर्द करने के लिए पर्याप्त नहीं है। पनडुब्बियों की सुपुर्दगी समय सारणी को पूरा करने के लिए वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए भी एमडीएल ने पनडुब्बी निर्माण हेतु अपनी बुनियादी सुविधाओं का संवर्धन करना शुरु किया है। सबमरीन सेक्शन एसेम्बली वर्कशॉप अलकॉक यार्ड में बुनियादी सुविधा संवर्धन कार्यक्रम का एक अंग है। इसके निर्माण से एमडीएल को भारतीय नौसेना के लिए पण्डुब्बियों की सुपुर्दगी रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिलेगी।

प्रमुख विशेषताएँ - इस कार्यशाला का आकार इस प्रकार है - लंबाई लगभग 220 मीटर, चौड़ाई 45 मीटर और ऊंचाई 39 मीटर है। इसकी संरचना स्टील के साथ ही सहायक संरचना आरसीसी से निर्मित की गई है इसमें कार्यशाला भवन और रेस्ट-रुम भी है। पूर्व निर्मित भवन में एमएस स्लाइडिंग डोर लगे हैं जिसकी लंबाई 40 मीटर और ऊंचाई 18 मीटर है इसके साथ ही पूर्वी केबल के छोर पर 4 पैनल लगे हुए हैं जिससे 30 मीटर लम्बे और 18 मीटर ऊंचे क्रेन से पूरे पनडुब्बी का मूवमेंट किया जा सकता है। कार्यशाला की छत वैकुम डीवाटर्ड है जिसमें इमबेडेड लैंड 2 मीटर X 2 मीटर सीवी की टाईल्स लगी हुई है। इस वर्कशॉप में यूटिलिटी सेवाओं का प्रावधान किया गया है जिसमें ऑक्सिजन, फ्यूम एक्सट्रैक्शन सिस्टम, फोर्सड कोम्प्रेसड एयर सिस्टम, वाटर सप्लाई और फायर फाइटिंग सिस्टम, फोसर्ड एयर वेंटीलेशन सिस्टम लगे हुए हैं। वर्कशॉप में 4 ईओटी क्रेन लगी हुई हैं जिनकी क्षमता 30 टन हैं। ये दो स्तरीय हैं। 02 नग सेमी गोलिएथ क्रेन भी लगाई गई है जिनकी क्षमता 150 टन है और 01 नग 60 टन क्षमता की सेमी गोलिएथ क्रेन बाटम टियर में लगाई गई है। जिसमें सबमरिन सेक्शन के संचालन में सुविधा हो। वहाँ पर एक ब्लास्टिंग एवं पेंटिंग चेम्बर है। कार्यशाला क्षेत्र में ही अंदर वॉशिंग एरिया है जहाँ पनडुब्बी अनुभाग की सफाई और ब्लास्टिंग के साथ पेंटिंग की सुविधा है।

विश्राम कक्ष भवन

इसमें भूतल के साथ 03 मंजिला आरसीसी से निर्मित सुपर स्ट्रक्चर हाउसिंग सब स्टेशन भूतल पर बना हुआ है। पेंट्री एरिया प्रथम तल पर और लॉकर एसएम मॉड्यूलर टायलेट / कामगारों के लिए बनाया गया है। बाथरुम दूसरे और तीसरे मंजिल पर पैसेंजर लिफ्ट के साथ उपलब्ध है। अगले हिस्से में दूसरे तल पर हल एवं विद्युत विभाग का कार्यालय है। तीसरे तल पर वित्त विभाग का कार्यालय है और चौथे मंजिल पर पूर्व खंड वाणिज्य विभाग का कार्यालय मॉड्यूलर चेयर से सुसज्जित है।

जल प्रबंधन प्रणाली

रिसायकिल वाटर का उपयोग कार्यालय भवन और विश्राम कक्ष में किया जाता है। रेन वाटर हार्वेस्टिंग, एसटीपी, ग्रेवाटर ट्रीटमेंट प्लांट और ऑइल वाटर सेपेरेटर की सुविधा ट्रीटेड वाटर का उपयोग करने के लिए किया जाता है।

पर्यावरण का प्रभाव

यह कार्यशाला एमडीएल परिसर के अंदर खुली भूमि पर निर्मित की गई है इसलिए इससे समुद्री पर्यावरण को कोई खतरा उत्पन्न नहीं होगा।

इस कार्यशाला में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट जीरो डिस्चार्ज के साथ प्रदान किया गया है इससे कोई जल प्रदूषण नहीं होगा। फ्यूम एक्स्ट्राक्शन सिस्टम कार्यशाला में लगाया गया है। जिससे वायु प्रदूषण नहीं होगा।

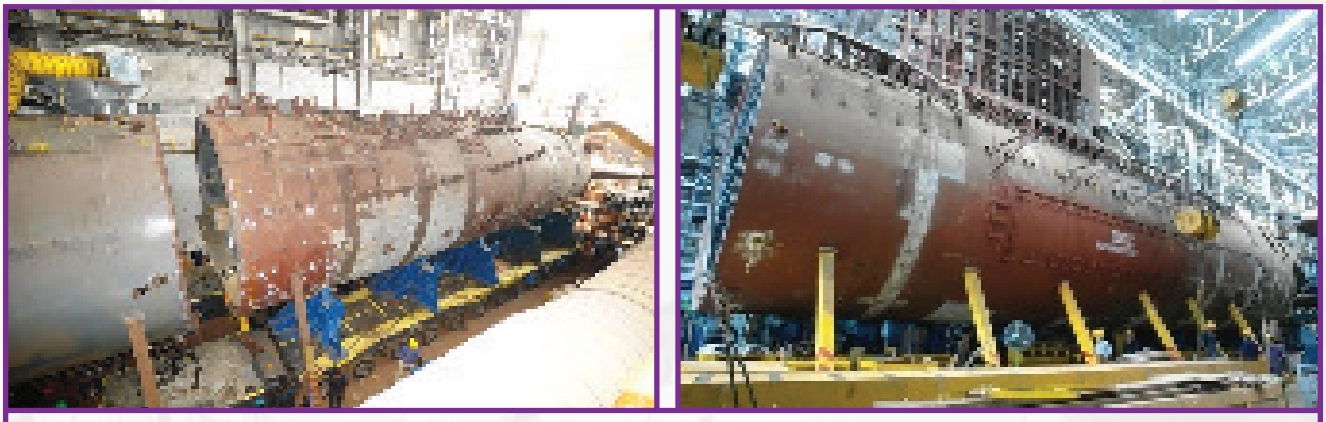
एसएस परियोजना की महत्वपूर्ण जानकारी

नए निर्माणाधीन क्षेत्र में उपरोक्त परियोजना की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. सम्पूर्ण कार्यस्थल क्षेत्र - लगभग 63950 वर्गमीटर
2. एसएसए कार्यशाला क्षेत्र - लगभग 96000 वर्गमीटर
3. कार्यालय भवन - लगभग 2740 वर्गमीटर
4. विश्राम कक्ष भवन - लगभग 730 वर्गमीटर
5. रोडवेज - लगभग 8500 वर्गमीटर

कार्यशाला भवन

1. कार्यशाला क्षेत्रफल
   220.40 मीटर लम्बाई
   40.00 मीटर चौड़ाई
   39.00 मीटर ऊंचाई
2. कार्यालय भवन
   इस भवन में लगभग 250 मीटर कार्मिकों के आवास की व्यवस्था है।
3. विश्राम कक्ष भवन
   - इस भवन में लगभग 525 कार्मिकों के कपड़ा बदलने की जगह और प्रसाधन की सुविधा है।
   - भूतल के साथ तीन मंजिला आरसीसी संरचना में एलीवेटर लगा है।
   - भूतल पर इलेक्ट्रोनिक पैनल लगाया गया हैं।
   - प्रथम तल पर डाइनिंग एरिया में एक समय 170 कर्मचारी खाना खा सकते हैं।
   - प्रसाधन विश्राम कक्ष सहित लॉकर्स दूसरी और तीसरी मंजिल पर उपलब्ध है।
   - टेरिस फ्लोर का रुपांकन इस प्रावधान से किया गया है जिसमें बगीचा जैसी हरियाली की विशेषताएँ हैं।
4. सहायक भवन
   कामगारों के लिए शौचालय
   फायर वाटर टैंक एवं एफएफ पम्प रुम
   क्षमता - 3,50,000 लीटर



एसएसए वर्कशॉप और मॉड्यूल शॉप में पनडुब्बियों की एसेम्बलिंग



सत्यनारायण प्रधान
अपर महाप्रबंधक (मा. सं.–समवाय एवं एमडीसी)

कंपनी संस्कृति का महत्व

प्रत्येक संगठन की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है, जो उसके मूल्यों, प्राथमिकताओं, वहां काम करने वाले लोगों, और बहुत कुछ आकार लेती है। ये कारक स्वाभाविक रुप से एक कंपनी के रोजमर्रा के वातावरण-इसकी कार्य संस्कृति के बनावट को एक साथ मिलाते हैं।

जो कंपनियां अपनी आंतरिक संस्कृति को महत्व देने में विफल रहती हैं, या जो जहरीली संस्कृति को बढ़ने और फैलने देती हैं, उन्हें असंख्य कठिनाइयों का अनुभव होता है। दुखद बात यह है कि यदि कार्यस्थल में संस्कृति परिवर्तन की आवश्यकता पर ध्यान दिया जाता तो इनमें से कई संघर्षों को टाला जा सकता है। शुक्र है, कंपनी की जहरीली संस्कृति आमतौर पर जल्दी दिखाई देती है, और अगर इससे जुड़े व्यवहार और दृष्टिकोण को समय पर रोक दिया जाता है, तो रास्ते की बहुत सारी समस्याओं को रोका जा सकता है। एक नियोक्ता या मानव संसाधन पेशेवर के रुप में, इन विषैले व्यवहारों को संबोधित करना हमारी जिम्मेदारी है।

किसी संगठन में सांस्कृतिक परिवर्तन क्यों होता है ?

कई अलग-अलग परिस्थितियाँ संगठनों को कार्यस्थल में संस्कृति परिवर्तन की आवश्यकता को पहचानने के लिए प्रेरित कर सकती है। जब कंपनी ने हाल ही में महत्वपूर्ण विकास किया है, नेतृत्व में बदलाव किया है, या आश्चर्य है कि कई अच्छे कर्मचारी कहीं और करियर क्यों बना रहे हैं? ये संकेत (और अन्य) चिन्हित करते हैं कि यह कंपनी संस्कृति को ओवरहॉल करने का समय हो सकता है। परामर्श किए गए विशेषज्ञों के अनुसार, यहां कुछ सबसे सामान्य कारण हैं, जो कंपनियों को कार्यस्थल में संस्कृति परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

कर्मचारी

कार्यस्थल में संस्कृति परिवर्तन के लिए एक प्रेरणा कर्मचारियों की समस्या है। अधिकांश कर्मचारियों पर भरोसा किया जा सकता है, लेकिन विद्रोही कर्मचारियों या कर्मचारियों से निपटने के लिए जो कंपनी की नीतियों का अनुचित रुप से लाभ उठाते हैं, उन्हें नियमों के स्पष्टीकरण और एक सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता हो सकती है। शुरुआत में कुछ परेशानी वाले कर्मचारियों को अनुमति देना उनकी बुरी आदतों को रखना हानिरहित लग सकता है लेकिन उनका दृष्टिकोण अन्य कर्मचारियों पर जल्दी से खराब हो सकता हैं और चारों ओर नकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित कर सकता है। सही संस्कृति एक उपाय हो सकती है क्योंकि "संस्कृति संक्रामक है" और कर्मचारियों पर कंपनी संस्कृति जो एक सक्रिय, आशावादी, समस्या-समाधान दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है वह खत्म हो जाएगी और सकारात्मक वातावरण बनाएंगी।

विकास

जैसे-जैसे कंपनियां बढ़ती हैं, उन्हें अक्सर कार्यस्थल में सांस्कृतिक परिवर्तन करने की आवश्यकता दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, लचीली कार्य सूची छोटी कंपनियों के लिए काम कर सकती है, लेकिन जैसे-जैसे वे बढ़ती हैं, विश्वसनीय स्टाफ सुनिश्चित करने में मदद के लिए अधिक संरचना और प्रक्रियाओं की आवश्यकता हो सकती है। इसके अलावा, जब कंपनियां बढ़ती हैं, तो आमतौर पर शीर्ष प्रबंधन की दृश्यता कम होती है, जो कंपनी की संस्कृति पर उनके प्रत्यक्ष प्रभाव को कम करती है।

कंपनी के विकास से उपसंस्कृति का विकास भी हो सकता है और कम संख्या में परेशान कर्मचारियों के बीच विषाक्त संस्कृति के लिए अधिक अवसर पैदा हो सकते हैं। बढ़ती कंपनी पर अधिक नियम भी लागू हो सकते हैं, और मौजूदा शासन मॉडल को विकास का समर्थन करने के लिए बदलाव की आवश्यकता हो सकती है। हालाँकि, सकारात्मकताएँ भी हैं, क्योंकि एक बढ़ती हुई कंपनी अलग-अलग दृष्टिकोण वाले नए लोगों को लाती है जो कंपनी की मदद कर सकते हैं। नए नेता एक विषाक्त कार्य संस्कृति को भी पहचान सकते हैं और कार्यस्थल में एक महत्वपूर्ण संस्कृति परिवर्तन शुरु कर सकते हैं।

प्रदर्शन

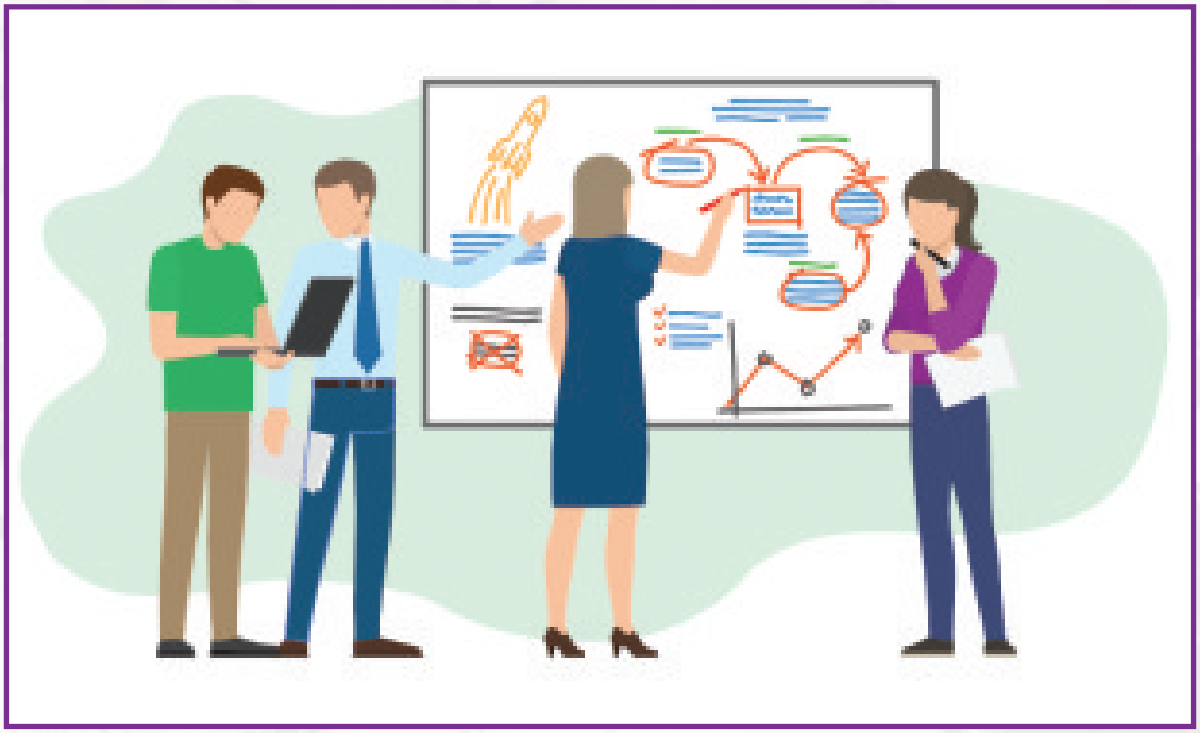
कई कंपनियां उच्च प्रदर्शन करने वालों को काम पर रखना चाहती हैं और इस तथ्य को नजरअंदाज कर देती हैं कि उनके पास अपने कार्यालय में पहले से ही एक इच्छुक और तैयार कार्यबल हो सकता है। बाहरी प्रतिभाओं की खोज करने से पहले, कंपनी की संस्कृति पर एक नजर डालें और निर्धारित करें कि क्या यह कर्मचारियों के विकास, नवाचार को प्रोत्साहित और उनके काम के प्रति उत्साह बढ़ाती है ? संस्कृति को बदलने से मौजूदा कर्मचारियों को बेहतर ढंग से प्रशिक्षित करने के तरीके खोजने में मदद मिल सकती है।

कर्मचारियों की हानि

कर्मचारी समय-समय पर नौकरी छोड देते हैं, लेकिन अगर बहुत से लोग जा रहे हैं और हमें नही पता कि हमें अपनी कंपनी संस्कृति की फिर से जांच क्यों करनी चाहिए और देखें कि क्या यह समस्या की जड़ है। मुख्य कारण यह है कि "युवा श्रमिक बेहतर स्थिति के लिए नौकरी या प्रबंधकों को छोड़ने से डरते नहीं हैं। अगर कोई कंपनी अपने सर्वश्रेष्ठ और प्रतिभाशाली को बरकरार रखना चाहती है, तो उन्हें अच्छे से बेहतर कर्मचारी अनुभव देने की जरुरत है।"

विलय और अधिग्रहण

विलय एकीकरण में संस्कृति एक बहुत बड़ा मुद्दा है। जब कंपनियों का विलय होता है और नेतृत्व बदलता है, तो कंपनी की गतिशीलता भी अक्सर बदल जाती है। सफल विलय और नेतृत्व परिवर्तन कंपनी संस्कृति के सफल एकीकरण पर निर्भर करते हैं।



संकट

ग्राहकों की शिकायतों, कर्मचारियों, प्रबंधन आदि के साथ प्रमुख समस्याओं के परिणामस्वरुप कानूनी समस्याएं, कंपनी का नुकसान, और बहुत कुछ हो सकता है। ऐसे समय में मालिकों और मानव संसाधन पेशेवरों को समान रुप से विचार करना पड़ सकता है कि भविष्य में इन समस्याओं से बचने के लिए कंपनी संस्कृति में बदलाव हो या नहीं। एक मजबूत, सफल कंपनी संस्कृति स्थापित करना किसी भी संगठन की दीर्घकालिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

एक मजबूत कंपनी संस्कृति का निर्माण कैसे करें ?

1. **नीव से शुरु करें**

जब कोई कंपनी शुरु की जाती है, तो वह अपने विश्वासों और अनुभवों से इसकी शुरुआत करता है। इन मूल सिद्धांतों के साथ नींव बनाना महत्वपूर्ण है। यह तब होता है जब किसी को एहसास होता है, चाहे कंपनी कहीं भी पहुंच जाए, उस संस्कृति से चिपके रहें जिसकी कल्पना की गई थी और उस पर काम करें।

2. **सही लोगों की नियुक्ति**

कंपनी अपने कर्मचारियों की विशेषता और कॉर्पोरेट संरचना और व्यवहार के बारे में उनकी समझ रखती है। इसलिए एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करना बहुत महत्वपूर्ण है जो कंपनी के दृष्टिकोण और मूल्यों के साथ अच्छी तरह से मेल खाती हो। इस तरह हम अपने संगठन को कॉर्पोरेट भीड़ में खड़ा करने में मदद कर सकते हैं। संगठन की विचारधाराओं के साथ फिट होने वाले सही लोगों को काम पर रखना एक महान रणनीति है। एक गलत चयन हमारे लिए खेल को पूरी तरह से बदल सकता है। उन लोगों का चयन करें जो संस्कृति के साथ फिट हों। जो वही दृष्टि रख सकता है और उस पर काम कर सकता है।

3. **दृष्टि**

जब हम एक कंपनी का निर्माण शुरु करते हैं, तो हम कई संभावनाओं की कल्पना करते हैं। पहली चीज जो हम करते हैं वह है लक्ष्य बनाना और उस पर काम करना। हम एक योजना बनाते हैं जिसमें हम लोगों को काम पर रखते हैं और उन्हें हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। जब हम एक मजबूत कंपनी संस्कृति शुरु करना चाहते हैं तो सही दृष्टि होना बहुत जरुरी है। ऐसा करते समय हमें यथार्थवादी प्राप्त करने योग्य लक्ष्य बनाना भी सुनिश्चित करना चाहिए। कोई भी बिना सोचे-समझे अवास्तविक लक्ष्य नहीं रख सकता या कर्मचारियों से ऐसे वादे नहीं कर सकता, जो कभी दिन के उजाले को नहीं देख पाएंगे।

4. **ब्रांड को एक कारण में बदलें**

हमारे ब्रांड का क्या मतलब है ? यह किन समस्याओं का समाधान करता है या हल करता है ? या क्या यह ग्राहक की सेवा करता है या किसी भी संभावित तरीके से उनकी मदद करता है ? इस तरह के प्रश्न बहुत नैतिक लग सकते हैं लेकिन वास्तव में यह किसी भी संगठन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक ब्रांड प्रतिष्ठा देता है जिसके लिए खड़े होते हैं।

जैसे कोका-कोला मन, शरीर और आत्मा को तरोताजा करने का वादा करता है। आशावाद के क्षणों को प्रेरित करने के लिए, मूल्य बनाएं और फर्क करें। यही कोका-कोला का अर्थ है और खुशी फैलाने में दृढ़ता से विश्वास करता है। कोका-कोला एक समावेशी कार्य संस्कृति को भी बढ़ावा देता है जो विविध लोगों, प्रतिभा और विचारों से समृद्ध है।

5. **नौकरी से संतुष्टि**

कर्मचारियों को खुश और संतुष्ट किए बिना एक महान कंपनी संस्कृति नहीं हो सकती है। सुनिश्चित करें कि कर्मचारी अपनी नौकरी से संतुष्ट हैं और प्रबंधकों के साथ काम करने का आनंद लें। चूंकि एक कार्यस्थल में लोगों का एक विविध समूह होता है, इसलिए आंतरिक कार्य संतुष्टि में सुधार करने में प्रभावी है।

जब कर्मचारी प्रबंधन और कार्य संस्कृति से खुश और संतुष्ट होते हैं, तो वे कंपनी को सफल बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं।

6. **कर्मचारियों का ख्याल रखें**

कर्मचारी संगठन के निर्माण खंड हैं। कंपनी की संस्कृति

उनके लक्षणों और आंतरिक व्यवहार के अनुसार आकार लेती है। कर्मचारियों का ख्याल रखना चाहिए। सुनिश्चित करें कि कर्मचारी खुद को अकेला महसूस न करें। उनकी बात सुनें। उनके जन्मदिन या कार्य वर्षगांठ पर उन्हें सरप्राइज दें। उन्हें व्यक्तिगत रुप से जानने की कोशिश करें, उनके साथ वास्तविक और पारदर्शी रहें।

कर्मचारियों का समर्थन करें और हमेशा उनकी जरुरत में मदद करें। सक्रिय रुप से उनकी बात सुनें, उनकी मनःस्थिति को समझने के लिए अधिक संवाद करें और यह जानने की कोशिश करें कि कौन उन्हें परेशान कर रहा है या उनकी भलाई के लिए काम कर रहा है। जब हम कर्मचारियों की देखभाल करते हैं और उन्हें बढ़ने में मदद करते हैं, तभी हम एक ऐसी टीम का निर्माण करते हैं जो कामयाब हो सके और कुछ भी पूरा कर सके।

7. <u>अच्छे लोगों को बनाए रखें</u>

अच्छे लोगों को बनाए रखना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि सही लोगों को काम पर रखना। जैसे ही हमें एहसास होता है, टीमों के निर्माण में क्षमता होती है और यह कंपनी को लंबे समय में आगे बढ़ने में मदद कर सकती है। वे कंपनी संस्कृति का निर्माण करते हैं और मूल्यवान हैं। दूसरा पहलू यह है कि इन लोगों को बनाए रखना कठिन है। उन्हें बनाए रखने के लिए जो करना है वह करें। उन्हें सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी प्रतिधारण कार्यक्रम प्रदान करें। इससे भी अधिक उन्हें यह एहसास कराएं कि यह उनकी कंपनी भी है और इसकी स्थिरता और विकास उनके साथ जुड़ा हुआ है।

8. <u>कर्मचारी जुड़ाव बढाएँ</u>

कर्मचारी जुड़ाव - ऐसे कर्मचारी जो "भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रुप से अपने काम और कार्यस्थल से जुड़े हुए हैं" - सकारात्मक कर्मचारी संबंध और एक सफल बॉटम लाइन बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हाल ही में गैलप पोल में पाया गया कि केवल एक तिहाई अमेरिकी कार्यबल काम पर लगे हुए हैं। उन्होंने यह भी पाया कि अत्यधिक व्यस्त कर्मचारी 17% अधिक उत्पादक हैं और उनकी अनुपस्थिति की दर 41% से कम है। कर्मचारियों की व्यस्तता बढ़ाने के लिए, महान नेताओं और प्रबंधकों का विकास, स्वस्थ कार्य संस्कृति, प्रभावी टीम का निर्माण, एक साथ स्पष्ट निर्धारित लक्ष्य और कर्मचारियों से नियमित प्रतिक्रिया दें कि वे अपने काम और कार्यस्थल (सर्वेक्षण) के बारे में कैसा महसूस करते हैं।

9. <u>कार्यदिवस लचीलेपन के लिए अनुमति दें</u>

आज के कर्मचारी एक निर्धारित पांच-दिवसीय कार्य-सप्ताह या आठ-घंटे का कार्यदिवस अधिक चाहते हैं। कर्मचारियों को वर्तमान में जिस नौकरी के लाभ की सबसे अधिक परवाह है, वे हैं जो उन्हें दूरसंचार, चार-दिवसीय कार्य सप्ताह, और/या लचीले घंटों सहित अधिक लचीलापन प्रदान करते हैं, जहां वे किसी भी समय आ सकते हैं जब तक वे उचित घंटे में रहते हैं और काम करते हैं। अनुसंधान से लगातार पता चलता है कि लचीला शेड्यूलिंग और घर से काम करने के विकल्प नौकरी लेने या छोड़ने के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। आधे से अधिक कर्मचारियों का कहना है कि फ्लेक्सिबल-टाइम के लिए नौकरी बदलें। 37% कर्मचारी एक अलग नौकरी में जाने के इच्छुक होंगे, जहां वे कम से कम समय के लिए ऑफसाइट काम कर सकते हैं।

10. <u>कर्मचारियों के साथ संचार में सुधार</u>

जबकि एक बार वार्षिक प्रदर्शन समीक्षा मानक हुआ करती थी, इन इंटरैक्शन का एकतरफा डिज़ाइन कर्मचारी संचार के अधिक प्रगतिशील रुपों को रास्ता दे रहा है। आज के कार्यकर्ता जो चाहते हैं वह है निरंतर प्रतिक्रिया, स्पष्ट रुप से संप्रेषित लक्ष्य, और एक सहयोगी कार्य वातावरण जो उन्हें उचित, प्रासंगिक और उत्साहजनक लगता है। हम कुछ आसान चरणों में संचार में सुधार कर सकते हैं जैसे प्रबंधकों के साथ बारंबार, अनौपचारिक संपर्क कर्मचारियों को यह समझने की अनुमति देते हैं कि उनका दैनिक कार्य कंपनी के लक्ष्यों से कैसे जुड़ा है और कर्मचारियों के साथ संवाद करना, सुनिश्चित करें कि वे अपनी समस्याओं और कठिनाइयों को स्पष्ट और पुनः प्रस्तुत करके महसूस करते हैं। अधिक उत्पादक कर्मचारियों के लिए खुशनुमा कार्यबल बनाता है, और सफल प्रबंधक लगातार कर्मचारी संतुष्टि का आकलन करते हैं।



डिजिटल युग में कंप्यूटर अनुवाद का योगदान

डॉ. सुमेध के हाडके
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, राजभाषा

डिजिटल युग में सूचना का संप्रेषण बहुत तेजी से हो रहा है। विश्व में सूचना के संचार से आज 'विश्व ग्राम' की संकल्पना उभरकर सामने आयी है जिसमें दुनिया के सभी देश एक दूसरे देशों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े हुए है जिससे उन्हें तुरंत नई जानकारी मिल रही है। भाषा अपने मनोभाव को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। आज किसी भी देश की प्रगति बिना भाषा के विकास से नहीं हो सकती है। इसलिए भाषा के विकास के लिए सम्पूर्ण दुनिया में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। इसे अधिक विस्तार से देखे तो पाया जाता है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, अंतरिक्ष, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और जनसंचार आदि विषय-क्षेत्रों से संबंधित जानकारी अधिकतर अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध होती है। अब इन सूचनाओं को विश्व की सभी स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराना आवश्यक हो गया है ताकि कोई भी देश नई जानकारी से अनभिज्ञ न रहें। वर्तमान में इस दिशा में प्रगति करने के लिए दुनिया की बहुत सी कंपनियाँ अपने उत्पादों को बेचने के लिए वहाँ की स्थानीय भाषा को टार्गेट कर रही है, जिससे उनके उत्पादों को आसानी से बेचा जाएं और कंपनी का उत्पादन भी बढ़े। इस प्रक्रिया में अनुवाद एक सेतु की तरह कार्य कर रहा है। अनुवाद में एक भाषा की पाठ्यसामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है।

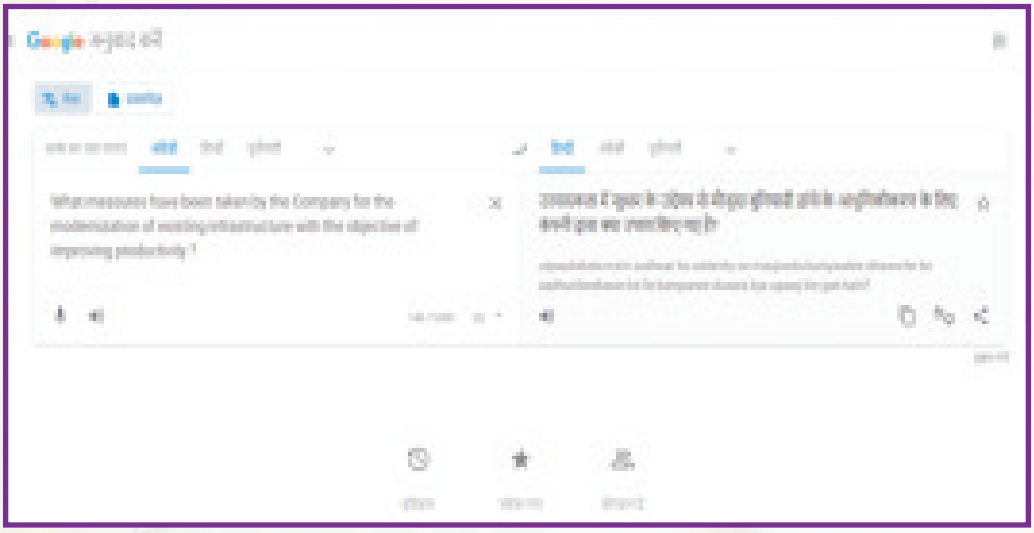
भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ संविधान स्वीकृत 22 भाषाएँ हैं। आज इन सभी भाषाओं में उपलब्ध कला, साहित्य एवं संस्कृति को जानना अनुवाद के चलते ही संभव हो पाया है। अनुवाद की यह प्रक्रिया बहुत पुरानी है, लेकिन वर्तमान में मनुष्य के द्वारा अनुवाद करना काफी श्रमसाध्य और समय खर्च करने वाला रहा है। इसलिए अनुवाद कार्य को सरल बनाने और मानव की सहायता के लिए विश्व स्तर पर 'मशीनी अनुवाद' का विकास हुआ है। भारत भी इस क्षेत्र में प्रगति करते हुए सरकार की ओर से भाषा के तकनीकी विकास और कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए कार्य कर रहा है। कंप्यूटर अनुवाद से तात्पर्य कंप्यूटर में समावेशित अनुवाद सॉफ्टवेयर के माध्यम से दूसरी भाषा में अनुवाद से है जिसे मशीनी अनुवाद भी कहते हैं।

मशिनी अनुवाद में कंप्यूटर की सहायता से एक भाषा की पाठ्य सामग्री का अनुवाद दूसरी भाषा में स्वचालित रुप से होता है। यह अनुवाद कंप्यूटर में स्टोर की गई मेमोरी और उसमें संचालित किए गए प्रोग्रामिंग के द्वारा होता है। इस प्रक्रिया के लिए द्विभाषी वाक्य, व्याकरणिक नियम, द्विभाषी शब्दकोश, व्याकरणिक जांचक तथा एल्गोरिदम को कंप्यूटर के डेटाबेस में संग्रहित किया जाता है और उससे अनुवाद होता है। इन मशीनी अनुवाद प्रणालियों का उपयोग प्रशासन, बैंकिग, उद्योग-व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों का अनुवाद करने के लिए अधिक प्रयोग किया जा रहा हैं। इसी आधार पर नीचे विस्तार से वैश्विक स्तर और भारत में विकसित मशीनी अनुवाद तंत्रों का विवरण दिया गया है जो अलग-अलग भाषाओं के साथ विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद कर रहे हैं।

1. गूगल अनुवाद (Google Translate 2006)

गूगल अनुवाद, बहुभाषी मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है, जिसे गूगल इन्कार्पोरेशन ने विकसित किया है। यह विश्व की 109 भाषाओं में टेक्स्ट टू स्पीच, और स्पीच टू टेक्स्ट तथा वेब साइट का अनुवाद करता है। इसमें भारत की प्रमुख 11 भाषाओं हिंदी, बांग्ला, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मराठी, पंजाबी, सिंधी, उर्दू और ओडिया का समावेश है। यह सांख्यिकीय मशीनी अनुवाद पर आधारित

अनुवाद सॉफ्टवेयर है जिसका प्रारंभ अंग्रेजी से अरबी में अनुवाद के लिए हुआ था और आज यह विश्व की अधिकांश भाषाओं में अनुवाद कर रहा है। गूगल अनुवाद सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाला और तुरंत अनुवाद करने वाला सॉफ्टवेयर है। यह सॉफ्टवेयर प्रशासनिक दस्तावेज, मनोरंजन, कृषि, राजनीति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तकनीकी, कला एवं संस्कृति, पर्यटन, स्वास्थ्य, खेल-कूद, अर्थव्यवस्था, बैंकिंग आदि विषय-क्षेत्रों का अनुवाद सही करता है। यदि अनुवाद के लिए छोटा पैरा और तकनीकी विषय से संबंधित सामग्री दी जाए, तो अनुवाद 85 प्रतिशत सही प्राप्त होता है।



2. **माइक्रोसॉफ्ट ट्रान्सलेटर (Microsoft Translator 2009)**

यह बहुभाषाई अनुवाद सॉफ्टवेयर है जिसे 'माइक्रोसॉफ्ट' ने विकसित किया है। यह दुनिया का दूसरे नंबर में प्रयोग किए जाने वाला सॉफ्टवेयर है। यह विश्व की 91 भाषाओं का अंग्रेजी के साथ द्विभाषी अनुवाद करता है। इसमें भारत की 12 भाषाओं में हिंदी, आसामी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, कन्नड, मलयालम, ओडिया, तमिल, तेलुगू और उर्दू का समावेश है। इस सॉफ्टवेयर के द्वारा किसी एक भाषा के पाठ (Text) से वाक् (Speech) एवं वेबपेज का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। इस सॉफ्टवेयर से प्रत्येक दिन 10 लाख पृष्ठों का अनुवाद किया जाता है। यह सॉफ्टवेयर प्रशासन, वाणिज्य, परिवहन, कृषि, स्वास्थ और प्रोद्योगिकी विषयों का अनुवाद सही करता है। फिर भी इससे प्राप्त अनुवाद पूर्ण रुप से सही नहीं कहा जा सकता, फिर भी यह 75 प्रतिशत अनुवाद सही करता है। इससे लोगों के समय और पैसे में बचत हो रही है। यह सॉफ्टवेयर अनुवाद न होने वाले शब्द को लिप्यंतरित कर देता है।

3. **याहू बेबेल फिश (Yahoo Babel Fish 2008)**

याहू बेबेल फिश यह अल्टा विस्टा (Alta Vista) द्वारा विकसित याहू वेबसाईट पर वेब आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर है। यह सॉफ्टवेयर विश्व की प्रमुख 38 भाषाओं के साथ अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करता है। यह एक भाषा के पाठ का या वेबपेज़ का दूसरी भाषा में अनुवाद करता है। इस सॉफ्टवेयर का निर्माण ऑस्कर ए. जोफ़ और उनकी टीम ने जनवरी, 1995 में किया था। जिसका प्रयोग डगलस एडम्स की श्रृंखला 'The Hitchhikers Guide to the Galaxy' के तत्कालिक भाषिक अनुवाद के लिए किया जाता था। जून 2013 से यह सॉफ्टवेयर माइक्रोसॉफ्ट बिंग के लिए कार्य कर रहा है। इस सॉफ्टवेयर से अनुवाद सही और सटीक होता है।

भारत के प्रमुख मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर

भारत में स्थानीय भाषाओं का विकास करने के उद्देश्य से मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा विभिन्न संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के माध्यम से अनेक उपकरणों एवं सॉफ्टवेयर का निर्माण किया जा रहा है। इसमें द्विभाषी वाक्यों का संकलन, द्विभाषिक कोश, शब्द संसाधक, विच्छेदक, रुपवैज्ञानिक विश्लेषक, प्रजनक, वर्तनी जाँचक, और वाक् प्रौद्योगिकी आदि का समावेश है, जिसमें निम्न मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर सुचारु रुप से कार्य कर रहे हैं।

4. **आंग्लभारती** (Anglabharati 1991)

आंग्लभारती परियोजना का प्रारंभ प्रो. आर. एम. के. सिन्हा के निर्देशन में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर में हुआ था। जिसका प्रयोग अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के लिए किया गया था। बाद में इसका प्रयोग अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए किया गया था। यह सॉफ्टवेयर में नियम आधारित प्रणाली (Rule Based System) का प्रयोग करते हुए स्वास्थ्य सेवाओं तथा सामान्य विषयों का अनुवाद करता है। इस सॉफ्टवेयर में स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद के लिए Pseudo - interlingua (Pseudo Lingua for Indian Languages) प्रणाली, सेन्स डिसैम्बिग्युएटर्स, लक्ष्य पाठ्य प्रजनक, बहुभाषिक शब्दकोश और नियम आधारित अधिग्राहक आदि घटकों का समावेश किया है। वर्तमान में इस परियोजना को सी-डैक नोएडा में स्थानांतरित किया गया जिसे आंग्लभारती द्वितीय कहा जाता है।

5. **अनुसारक** (Anusaarakaa 1995)

प्रो. राजीव संगल के निर्देशन में आई. आई. टी. कानपुर ने 'अनुसारक' मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर परियोजना की शुरुआत की। बाद में इस परियोजना को आई. आई. टी., हैदराबाद में स्थानांतरित किया गया है। इस सॉफ्टवेयर में पाणिनीय व्याकरण के सिद्धान्तों का प्रयोग कर भारतीय भाषाओं में अनुवाद को उन्नत बनाने का कार्य किया गया है। यह स्रोत भारतीय भाषा के पाठ को लक्ष्य भारतीय भाषा के निकटतम और ग्राह्य रुप में अनूदित करता है। यह सॉफ्टवेयर तेलुगू, कन्नड़, बांग्ला, मराठी और पंजाबी से हिंदी भाषा में अनुवाद करता है। इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग सामान्य अनुवाद और बच्चों की कहानियों का अनुवाद करने के लिए किया जाता है।

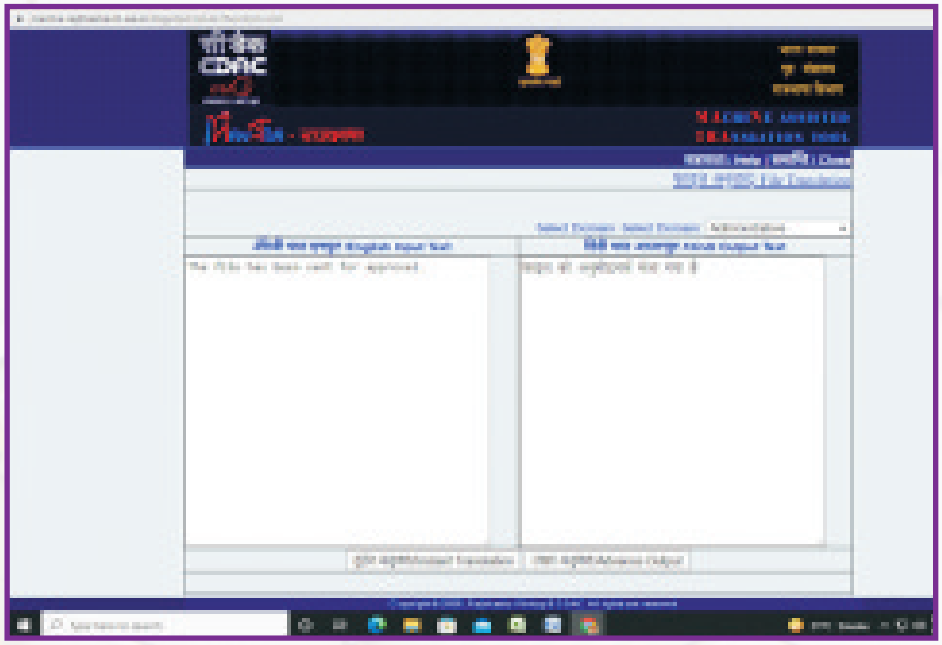
6. **अणुभारती** (Anubharati1995)

आई. आई. टी. कानपुर की दूसरी परियोजना 'अणुभारती' है। इसका विकास प्रो. आर. एम. के. सिन्हा के निर्देशन में हिंदी से अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए किया था। यह उदाहरण आधारित प्रणाली पर कार्य करता है, जिसमें स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में उदाहरण आधारित कॉर्पोरा के माध्यम से अनुवाद किया जाता है। साथ ही ये सॉफ्टवेयर दोनों भाषा के वाक्यों का अनुवाद शब्द स्तर पर करता है। उदाहरण आधारित प्रणाली से हिंदी वाक्य को पदबंध के अनुसार विश्लेषण कर वाक्य संरचना के क्रम में की जाती है। साथ ही हिंदी के मानकीकृत वाक्य को अनूदित वाक्य के साथ संयोजित किया जाता है। इसकी दूसरी परियोजना उदाहरण आधारित एवं कार्पस आधारित संरचना और व्याकरण विश्लेषण के संयोजन से बनी है।

7. **मंत्र-राजभाषा** (Mantra-Rajbhasha 1999)

मंत्र-राजभाषा को सी-डैक, पुणे के एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ग्रुप ने विकसित किया है। इसमें अंग्रेजी से हिंदी व्याकरण, पद-विच्छेदन तथा वाक्य प्रजनन के लिए कोशीयकृत वृक्ष संलग्न व्याकरण (प्रो. अरविंद जोशी, पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय, अमेरिका)

का प्रयोग किया गया है। यह भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अधीन राजभाषा और प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इस सॉफ्टवेयर से राजभाषा के प्रशासनिक तथा कृषि, बैंकिंग, शिक्षा, वित्त, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी आदि विषय-क्षेत्रों का अनुवाद अंग्रेजी से हिंदी में किया जाता है। वर्तमान में अन्य भाषाओं में इसका विकास के लिए प्रयास जारी है। यह सॉफ्टवेयर ऑनलाइन रुप में https://mantra-rajbhasha.rb-aai.in/ पर उपलब्ध है।



8. **आंग्लहिंदी (Anglahindi, 2003)**

आंग्लहिंदी यह अंग्रेजी से हिंदी मशीन साधित मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है। जिसके निर्माण में आंग्लभारती मॉड्यूल का प्रयोग किया गया है। इससे संज्ञा पदबंध और क्रिया पदबंध के सही और सटीक अनुवाद के लिए इसमें नियम आधारित, उदाहरण आधारित और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। यह सॉफ्टवेयर 20 शब्दों तक के सरल, जटिल और मिश्रित वाक्य का अनुवाद कर सकता है। अनुवाद प्राप्ति के बाद इसमें पश्च संपादन की आवश्यकता होती है। अगर कोई अज्ञात शब्द शब्दकोश में नहीं मिलता है और जहाँ वर्तनी की गलतियाँ होती है, उसे यह हिंदी (देवनागरी) में लिप्यंतरित करता है। इसमें वाक्य की पहचान के लिए अंग्रेजी ओसीआर के साथ पाठ से वाक प्रणाली का समावेश भी इसमें किया गया है।

9. **मात्रा (MaTra 2004)**

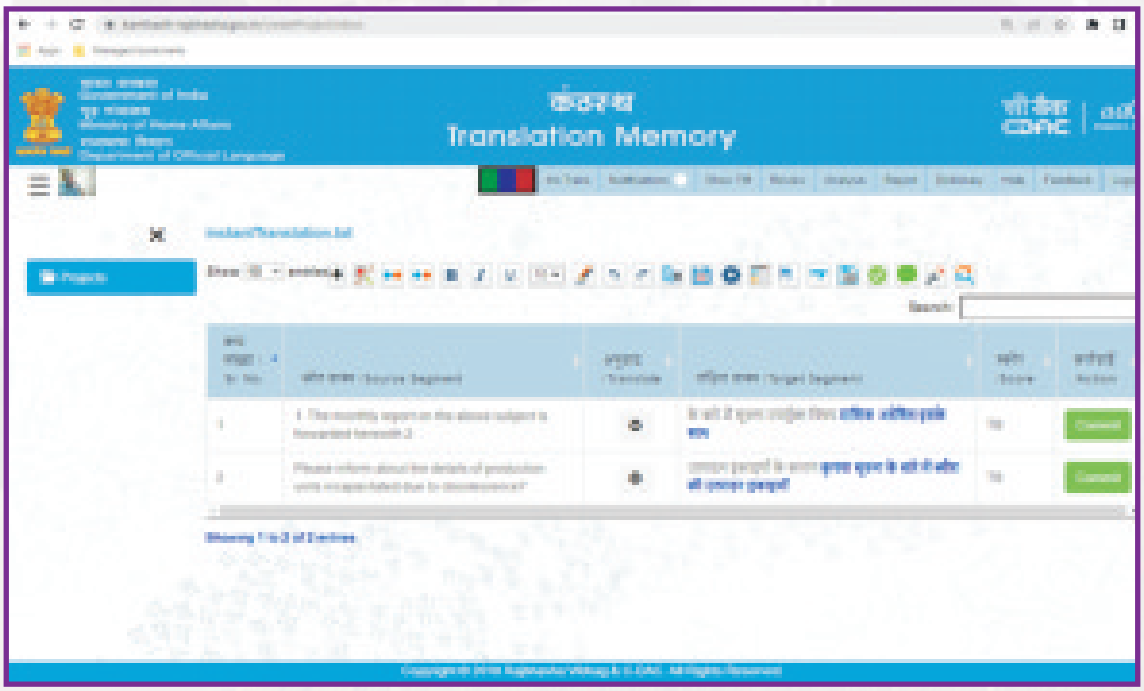
मात्रा, यह पूर्णतः स्वचालित अंग्रेजी से हिंदी मशीन अनुवाद सॉफ्टवेयर है। इसे राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केंद्र, मुंबई ने विकसित किया है। वर्तमान में इस पर सी-डैक मुंबई में कार्य चल रहा है। मात्रा ने प्राकृतिक भाषा विश्लेषण की पारंपरिक समस्याओं पर अभिनव दृष्टिकोण अपनाते हुए नई फ्रेम संरचित प्रणाली का प्रयोग किया है। यह सॉफ्टवेयर वाक्यों का अर्थपरक विश्लेषण करने के साथ सामान्य क्षेत्र, समाचारों, वार्षिक प्रतिवेदनों और तकनीकी शब्दों का अनुवाद करता है।

10. अनुवादक (Anuvaadak)

नई दिल्ली की एक निजी संस्था सुपर इन्फोसाफ्ट ने श्रीमती अंजली राव चौधरी के निर्देशन में अनुवादक 5.0 सॉफ्टवेयर का विकास किया है जिसका प्रयोग सामान्य प्रयोजनार्थ अंग्रेजी के सरल वाक्यों का हिंदी अनुवाद के लिए किया जाता है। इसमें कार्यालयी, प्रशासन, कृषि, भाषा विज्ञान, तकनीकी आदि विषय-क्षेत्रों के अंग्रेजी-हिंदी शब्दावली और पदबंधीय कोश का समावेश किया गया है। इससे अंग्रेजी दस्तावेजों का वाक्य-विन्यास कर हिंदी व्याकरण के नियमों के अनुसार हिंदी में अनुवाद किया जाता है। इस सॉफ्टवेयर में दिए गए शब्दकोश में नए शब्दों को जोड़ने, बदलने तथा वर्तनी जांचने की सुविधा उपलब्ध है।

11. कंठस्थ - स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी. एम.) मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रुप को एक-साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनःप्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी. एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रुप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य का अनुवाद टी. एम. के माध्यम से देता है। टी. एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है।



12. द्विभाषी बंगाली मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर

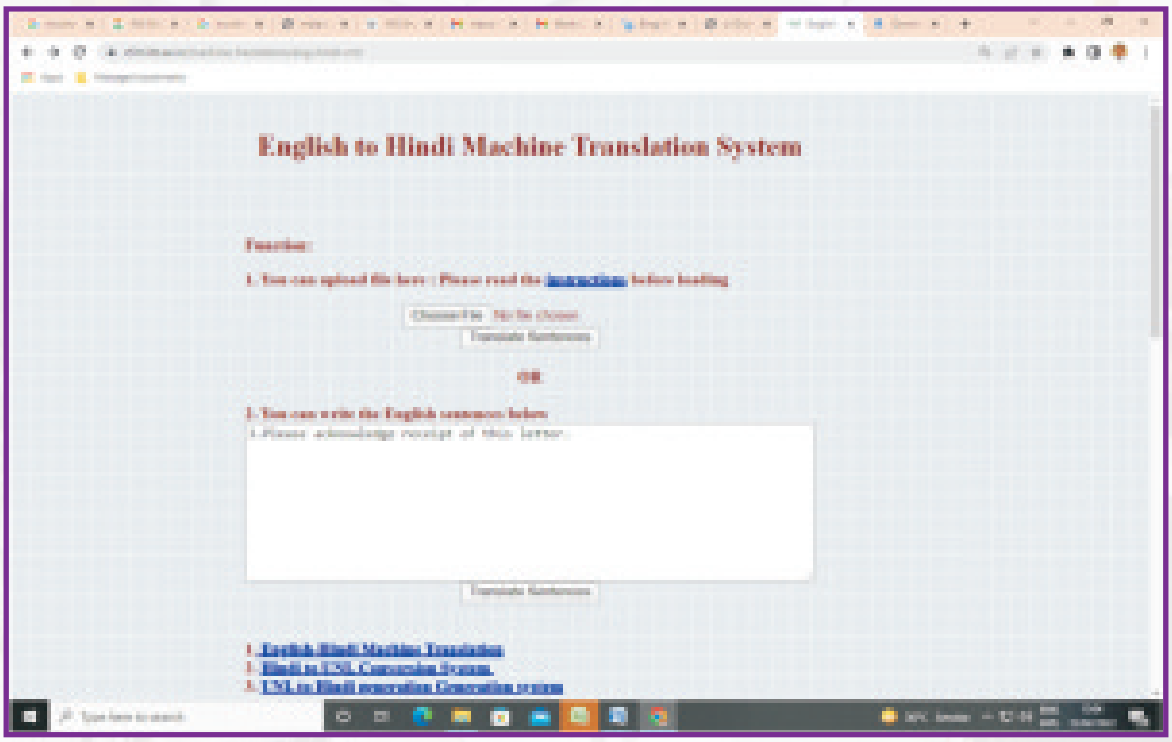
द्विभाषिक बंगाली-आसामी स्वचालित मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर का निर्माण समाचार पाठ के अनुवाद के लिए किया गया है। इसमें उदाहरण आधारित मशीन अनुवाद प्रणाली का प्रयोग किया गया है। जिसमें वाक्यों के अनुवाद के लिए पूर्व-संसाधित तथा पश्च संपादित किया जाता है। सही और गुणवत्तापूर्ण अनुवाद के लिए वाक्य अगर बड़े हैं तो विराम चिन्ह द्वारा उसे खंडित किया जाता है और वाक्य स्तर पर सरल अनुवाद किया जाता है।

13. अंग्रेजी-कन्नड़ मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर (2002)

यह मशीन साधित अनुवाद सॉफ्टवेयर है। जिसे हैदराबाद विश्वविद्यालय के डॉ. के. नारायण मूर्ति ने अंग्रेजी से कन्नड़ में अनुवाद करने के लिए विकसित किया है। इसमें अंतरण आधारित दृष्टिकोण का प्रयोग, सरकारी परिपत्रों के अनुवाद के लिए किया जाता है। इसमें द्विभाषी शब्दकोश, रुपवैज्ञानिक विश्लेषक के द्वारा कन्नड़ में अनुवाद किया जाता है।

14. UNL - आधारित अंग्रेजी-हिंदी मशीन अनुवाद सॉफ्टवेयर (2003)

'यूनिवर्सेल नेटवर्किंग लैंग्वेज' यह संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय, टोकियो की अंतरराष्ट्रीय परियोजना है, जिसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय स्तर की सभी भाषाओं को अंतरभाषा के माध्यम से विकसित करना है। UNL के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं से जोड़ने के लिए आई. आई. टी., मुंबई इस परियोजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रो. पुष्पक भट्टाचार्या अंग्रेजी से मराठी और बांग्ला भाषाओं में मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए प्रयास कर रहे हैं। यह सॉफ्टवेयर सामान्य विषय-क्षेत्रों का अनुवाद करता है। यह सॉफ्टवेयर http://www.cfilt.iitb.ac.in/machine-translation/eng-hindi-mt/ पर उपलब्ध है।



15. 'अनुवाद' मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर (2004)

जादवपुर विश्वविद्यालय ने समाचार पत्रो के शीर्षकों का अंग्रेजी से बंगाली में अनुवाद के लिए संकरित दृष्टिकोण पर आधारित सॉफ्टवेयर का निर्माण किया है। यह सॉफ्टवेयर समाचार के शीर्षकों का अनुवाद ज्ञान आधार और उदाहरण संरचना के आधार पर करता है।

16. हिंग्लिश (Hinglish 2004)

यह सॉफ्टवेयर हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करता है, इसे प्रो. सिन्हा और ठाकुर ने विकसित किया है। इसे विकसित करने के लिए अंग्रेजी से हिंदी आंग्लभारती (II) और हिंदी से अंग्रेजी अनुभारती (II) प्रणाली का प्रयोग किया गया है। हिंग्लिश से प्राप्त किया जाने वाला अनुवाद अधिकांश स्वीकार्य होता है। यह सॉफ्टवेयर बहुअर्थक क्रियापदों के अर्थ को हल करने में पूर्ण रुप से सक्षम नहीं है।

17. आई. बी. एम. (IBM) अंग्रेजी-हिंदी मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर (2006)

आई. बी. एम. (International Business Machines) रिसर्च इंडिया ने इसका निर्माण किया है। प्रथम यह सॉफ्टवेयर उदाहरण आधारित दृष्टिकोण पर था बाद में इसे सांख्यिकीय दृष्टिकोण (Statistical) में परिवर्तित किया गया। इससे अंग्रेजी से अन्य भारतीय भाषाओं में मशीनी अनुवाद करने के लिए विकसित किया जा रहा है।

18. तमिल-हिंदी अनुसारक एवं अंग्रेजी-तमिल मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर

इसे प्रो. सी. एन. कृष्णन के निर्देशन में के. बी. चन्द्रशेखर शोध केन्द्र, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई में विकसित किया है । तमिल से हिंदी में अनुवाद के लिए सॉफ्टवेयर में द्विभाषी शब्दकोश, रुपवैज्ञानिक विश्लेषक, सम्मिलक इकाई और प्रजनक आदि घटकों का समावेश किया है। इसी शोध केंद्र ने अंग्रेजी-तमिल मशीन साधित अनुवाद सॉफ्टवेयर को विकसित किया है।

19. असमिया मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर

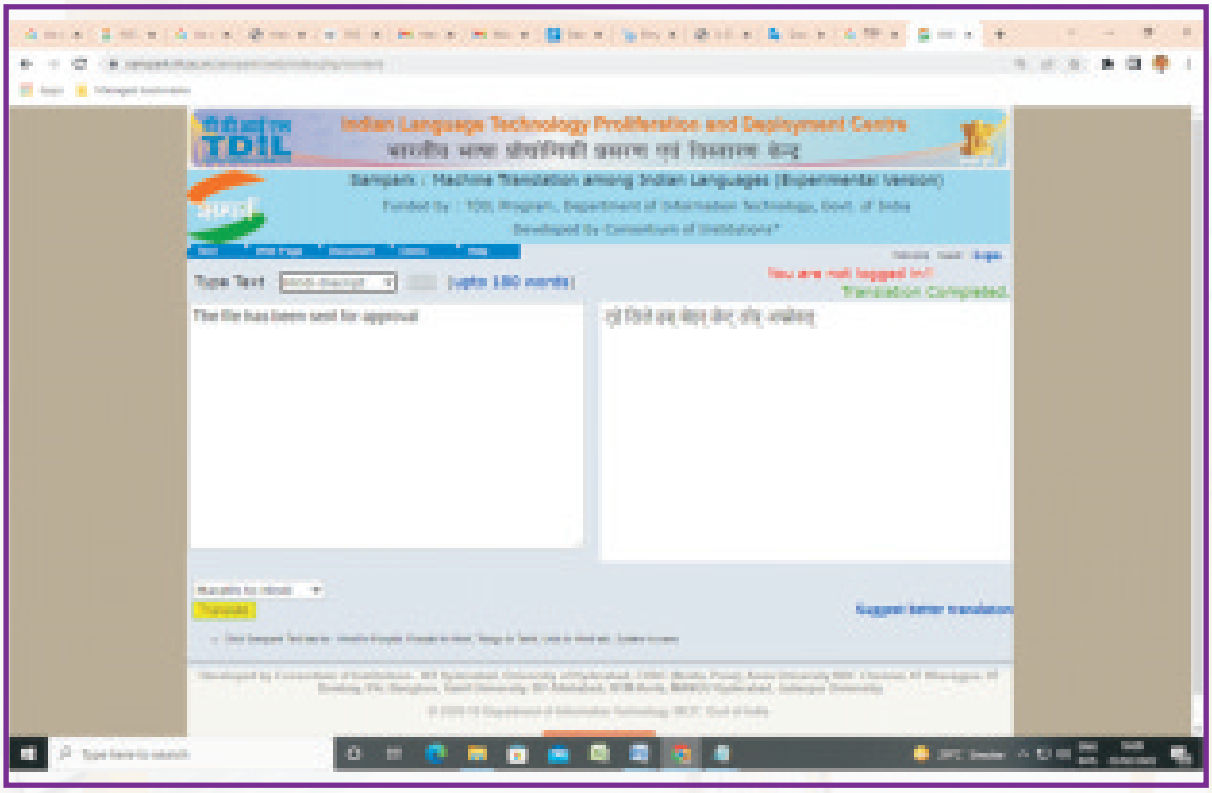
आई. आई. टी., गुवाहटी ने अंग्रेजी से असमिया मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर को विकसित किया है। यह सॉफ्टवेयर मूलतः नियम आधारित है जो अंग्रेजी से असमिया द्विभाषिक शब्दकोश के आधार पर अनुवाद करता है। यह अंग्रेजी से अनुवाद करते समय इनपुट वाक्य का रुपवैज्ञानिक, वाक्यगत और अर्थ के स्तर पर विश्लेषण करता है। फिर अनुवाद की प्रक्रिया स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में शब्द प्रति शब्द और पद से पद शब्दकोश के माध्यम से होती है।

20. ओडिया मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर

इस सॉफ्टवेयर को उत्कल विश्वविद्यालय की डॉ. संघमित्रा मोहंती ने विकसित किया है। यह अंग्रेजी से ओड़िया में अनुवाद करता है। अनुवाद के लिए ओड़िया ई-शब्दकोश, ओड़िया वर्डनेट, वर्तनी जाँचक, रुपवैज्ञानिक विश्लेषक और शब्द-संसाधक आदि उपकरणों का विकास किया जा रहा है।

21. संपर्क (Sampark 2009)

इस सॉफ्टवेयर का विकास सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए किया जा रहा है। इस परियोजना के विकास कार्य में 11 विश्वविद्यालयों, संस्थानों तथा केंद्रों का समावेश है। यह सॉफ्टवेयर 9 स्थानिय भारतीय भाषाओं में अनुवाद करता है। संपर्क में, भाषा के विश्लेषण के लिए पाणिनी व्याकरण का प्रयोग कर मशीन लर्निंग को भी इसमें जोड़ा गया है। इसमें पारंपरिक नियम, शब्दकोश आधारित एल्गोरिदम के साथ सांख्यिकी का प्रयोग मशीन को सीखने के लिए किया गया है।



22. पंजाबी से हिंदी मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर (2008, 2009)

इस सॉफ्टवेयर को प्रो. जोसन और लेहल (Josan and Lehal) के निर्देशन में पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला में विकसित किया गया है। इसमें शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद के लिए विभिन्न स्रोतों का प्रयोग किया जाता है। जैसे - धातु कोश, रुपप्रक्रियात्मक कोश, संदिग्धार्थक शब्दकोश आदि का समावेश है। अनुवाद मॉड्यूल्स वाक्य की विभिन्न वाक्यगत संरचनाओं में नामीय पद अभिज्ञान, शब्द आशय विसंदिग्धक, पुनरावृत्ती, लिप्यंतरण आदि का प्रयोग करते हैं।

23. लीला सॉफ्टवेयर (Lila Software)

सी-डैक पुणे के AAI (एप्लाइड आर्टिफिसियल इंटैलिजेन्स) ग्रुप द्वारा लीला सॉफ्टवेयर को विकसित किया गया है। Lila (Learning Indian Languages Through Artificial Intelligence) का अर्थ है कृत्रिम बुद्धि की सहायता से भारतीय भाषाओं का अधिगम कार्यक्रम है। इसमें हिंदी पाठ्यक्रम 'प्रबोध', 'प्रवीण' और 'प्राज्ञ' पर उपलब्ध है। यह सॉफ्टवेयर विभिन्न सरकारी कर्मचारियों को कक्षा शिक्षण तथा दूरस्थ शिक्षण प्रणाली द्वारा हिंदी शिक्षण दिया जाता है। यह कार्यक्रम विशेषतः उन कर्मचारियों के लिए उपयोगी है जो नियमित रुप से कक्षा में उपस्थित रहकर हिंदी सीख पाने में असमर्थ हैं। आज सॉफ्टवेयर कार्यक्रम सभी कर्मचारियों को ऑनलाईन रुप में शिक्षा दे रहा है।

भारतीय भाषाओं में मशीनी अनुवाद की दिशा में अन्य भी सॉफ्टवेयर कार्य कर रहे है। ज. ने. वि., नई दिल्ली के संस्कृत अध्ययन केन्द्र के शोधार्थी ने संस्कृत सुबंत विश्लेषक का विकास किया है। बंगाली से हिंदी में मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर आई. आई. टी., खड़गपुर ने विकसित



किया है। अंग्रेजी से मणिपुरी मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर के लिए शिवाजी बंद्योपाध्याय के निर्देशन में जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में कार्य पर चल रहा है। इसी तरह अन्य मशीनी अनुवाद तंत्रो का विकास विश्वविद्यालयों, संस्थानों, निजी कंपनियों के द्वारा किया जा रहा है, जिससे मनुष्य को अनुवाद में सहायता मिल रही है।

निष्कर्षतः विश्व स्तर पर तथा भारत में मशीनी अनुवाद के अनेक तंत्रो का निर्माण किया गया है, लेकिन अनुवाद में गुणवत्ता का अभाव रहा है। वास्तव में मशीनी अनुवाद सीमित क्षेत्र के विषयों में अनुवाद करने के लिए सक्षम है। अधिकतर कार्यालयीन और प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद करने के लिए ये सॉफ्टवेयर सक्षम है। लेकिन जब साहित्य के अनुवाद की बात आती है तो अनुवाद में अक्सर गलतियाँ होती हैं और अनुवाद में संदिग्धता उत्पन्न होती हैं। इसलिए कंप्यूटरविद और भाषाविद को इस क्षेत्र में अधिक कार्य करने होंगे ताकि मशीन द्वारा अनुवाद सही प्राप्त हो। सरकार की तरफ़ से भी विविध परियोजनाएं चलायी जा रही हैं। भविष्य के लिए यह संभावना दर्शायी जा सकती है कि प्रत्येक भारतीय भाषा में मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर विकसित होंगे, जो अनुवाद सही और गुणवत्तापूर्ण करेंगे।



सुश्री जयंतिका मुखर्जी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, राजभाषा

बात

छोटी-सी मन की आशा दिन-दिन अभावों में कुढ़ता है, खत्म हो जाता है। जिंदगी भी बहुत के बजाए थोड़ा ही रह जाता है। दिन कटता जाता है, पता नहीं क्यों और किसके लिए ? इसे बोझ समझूँ या फिर सृष्टि का एक अनिवार्य नियम जिसमें हम सब एक तार में बंधे हुए होकर भी अलगाव महसूस करते हैं। थोड़े-थोड़े दिन के बाद यह तार झनझना उठता है और हम किसी अनजानी दिशा की ओर दौड़ पड़ते है, यह न समझकर कि हमें जाना कहाँ है ?

सवालों का यह सिलसिला तो कभी न खत्म होने वाला-सा ही लगता है पर कहीं तो इसका अंत होगा... पर कहाँ ? यह शायद ही किसी को मालूम है।

इस बात पर मुझे एक बहुत पुरानी सी-बात आज अचानक ही याद आ गई। पता नहीं यह बात मुझे कैसे याद रह गई। सोचती हूँ तो हैरान हो जाती हूँ। शायद अन्तर्मन के किसी अंजान कोने में इस बात ने कुछ असर डाल दिया था, जिसे चाह कर भी कभी भुला नहीं पाई।

बच्चे.... हाँ.... बच्चे । मैं बच्चों की ही बात कर रही हूँ। नन्हा-मुन्ना, निटोल, गोराचिट्टा, खाते-पीते घर का नहीं जिसे देखकर ही मन में यह ख्वाइश हो उठती है कि कुछ देर के लिए ही सही उसे गोदी में उठा लूँ, थोड़ा पुचकार लूँ, थोड़ा दुलारु। नहीं, बिलकुल नहीं। मैं किसी ऐसे बच्चे की बात नहीं कर रही हूँ। वह बच्चा, बस्ती का लड़का, काला-कलूटा, गंध और धूल-मिट्टी से सना, कीचड़ से लोटपोट, गरीबी में जन्म ले चुका - बच्चा। पर... वह इतने सारे गुणों से लैस होकर भी गरीबी की गुणगांव में एक तारा और चमका रहा था। न जाने यह तारा उसे किसी ऊँचाई पर बैठने के लिए उसके जन्म के साथ ही उससे लगा हुआ था या फिर यह किसी टूटते तारा का ही प्रतीक था, इसका उत्तर देना कठिन था।

आप जरुर सोच रहें होंगे कि ईश्वर ने ज़रुर उसे किसी नायाब फन से नवाजा होगा। हाँ, वह नायाब तो था पर उसे फन नहीं कहा जा सकता। गरीबी के माहौल में किसी का अपाहिज होना तो उसे हाथ-पैर बांध कर पानी में फेंकने बराबर होता है। जी हाँ, वह बच्चा अपाहिज और रुग्ण था। जिस देश में खाने और कमानेवाले के बीच का अंतर ज्यादा हो, वहाँ इस तरह की बीमारी हमारे तकदीर के लिए कुछ हास्यास्प्रद सा लगता है साथ ही यह काला-कौतुक भी बन जाती है, जब वह किसी गरीबी में पनपती है।

आगे उसी बच्चे पर अपनी नज़र डालते है। यह बच्चा करीब सात-आठ साल का रहा होगा। हँसमुख बच्चा। उसके साथी उसकी परवाह न करते हुए अपने में ही हँस-खेल रहे थे। सबसे वंचित होकर भी बार-बार वह रेग-रेग कर अपने साथियों के साथ आ बैठता और खेलने की कोशिश करता। उसे देख उसके सब साथी मुंह बनाते और ऐसा भान करते कि वे उसे देखे ही नहीं। यह क्रम कुछ 3-4 बार चला। बच्चा स्वाभिमानी था। जब उसने देखा कि उसके साथी उसका रहना पसंद नहीं कर रहें है तो वह उनसे दूर हट कर अपने जेब में से कुछ निकालकर खाने लगा। मैं

उससे काफी दूर थी। उनकी बातचीत नहीं समझ पा रही थी पर हाव-भाव समझ पा रही थी। पता नहीं क्यों मुझे उन बच्चों का उस अपाहिज लड़के के साथ ऐसा बर्ताव अच्छा नहीं लगा, शायद यह नारी सुलभ भावना इसका मूल कारण रहा हो।

बच्चा अपने साथियों से तिरस्कार पाकर दूर जा बैठा और जेब से निकालकर खाने लगा। उसके कुछ दूर में बैठा हुआ एक चायवाला अचानक ही गुस्से से भरकर उसकी तरफ बढ़ा और उसे एक जोर का चाटा मारा। आवाज काफी ज़ोर का था। मैं चौंककर उस तरफ देखने लगी कि क्या बात हो गई ? उसके हाव-भाव को देखकर ऐसा लगा कि बच्चा जो खा रहा था वह उसके दुकान से चुराया हुआ था। वह चायवाला उसे मार रहा था और बच्चा ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था। वह अपनी सफाई में कुछ कहने लगा पर वह चायवाला उसकी बात अनसुनी करके धड़-धड़ मारे जा रहा था। बच्चे के माथे के पास मैंने ध्यान दिया तो पाँच- छह लाल बुँदे दिखाई दे रही थी। यह लाल बूँदे खून की थी, इतना मैं समझ गई। मुझसे यह अत्याचार देखा नहीं गया और मैंने अपना मुँह फेर लिया। थोड़ी देर बाद वहाँ भीड़ जमा हो गई जैसे कि अक्सर हम राह चलते हुए पाते हैं।

पर उस दिन पहली बार मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं उस बच्चे को शायद मार खाने से बचा सकती थी, लेकिन न जाने क्यों मेरे पैर आगे नहीं बढ़े। कोई पंद्रह मिनट के बाद भीड़ छटी तो मैंने देखा बेचारा बच्चा अधमरा मुँह के बल जमीन पर पड़ा हुआ है और उसके साथी उसकी इस दशा को देखकर इधर-उधर ताक रहें हैं। मैंने रास्ता पार किया और चायवाला से जाकर पूछा कि क्या बात हुई कि आपको इस बच्चे को मारना पड़ा ? इतना ही जवाब मिला कि, उसके दुकान से बिस्कुट चोरी हुई थी। उसे लगा इस बच्चे ने चुराया है। बच्चे से पूछताछ की तो बच्चा ने इंकार किया तो उनको गुस्सा आया और उसको मारा-पीटा गया। उसे मार खाता देखकर उसके साथियों में से एक ने कबुल किया कि यह उस अपाहिज बच्चे का काम नहीं था बल्कि उनके दूसरे साथी ने उसे बिस्कुट चुराकर दिया था। अपाहिज बच्चे को मार खाता देखकर वह डर गया और वहाँ से भाग खड़ा हुआ। इतना सुनकर मैंने सिर्फ इतना ही कहाँ - "तो दो बिस्कुट का दाम आपने उस बेचारे लाचार बच्चे को मार-मार कर वसूल किया"।

मुझे अपने आप पर गुस्सा और लाचार बच्चे पर दया आ रही थी। दो-चार दिन बाद मुझे पता चला कि बच्चा अस्पताल से होकर संसार से विदा ले चुका था। यह बताना मुश्किल था कि बच्चा मार खाने से मर गया कि उसे पहले से ही कोई अन्य रोग था, हम तो केवल अटकलें लगा सकते हैं सच्चाई तो उनके परिवारवालों को ही पता होगा।

मन से बोझ हट गया। सोचा कहीं जिंदा रहता तो न जाने ऐसी और कितनी परेशानियों और दुख का सामना करना पड़ता। अच्छा हुआ वह इस संसार के जंजाल से पार हो गया। दुख मुझे इस बात का था कि बच्चे जहां भावी युग के धरोहर कहे जाते हैं वहीं वह नन्हा पौधा बिना किसी आधार के गुमनाम मौत का शिकार हो गया। न जाने उस जैसे कितने बच्चे हर रोज़ इस मायावी संसार को छोड़कर चले जाते हैं। क्या पता अगर वे जिंदा रहे तो जीवन उनका संघर्षपूर्ण रहता जहां अपाहिजता का श्राप उसे बड़े अजगर जैसा निगल लेता।

घर जाकर भी मैं इसी बात पर विचार करने लगी। वह गरीब का बच्चा था शायद इसलिए उस पर दया करने वाला, थामनेवाला, बचाने वाला कोई नहीं था। अगर, यही कोई अमीर पिता का बिगड़ा बेटे के साथ करता तो शायद उसकी चमड़ी उधेड़ गई होती। चाहे उसमें लाख बुराई हो यह केवल अमीर दी बेटे होने के नाते बच ही जाता था।



रविंद्र जाधव
हाई स्किल्ड इलेक्ट्रिशियन, एस बी – इलेक्ट्रिकल

स्टार्टअप इंडिया

स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक पहल है। अभियान की घोषणा भारतीय प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी ने लाल किले से 15 अगस्त 2015 के दौरान नई दिल्ली में की थी।

इस पहल की कार्य योजना तीन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर रही है :

1. सरलीकरण और हैंड होल्डिंग।
2. वित्त पोषण सहायता और प्रोत्साहन।
3. उद्योग-अकादमी भागीदारी और ऊष्मायन।

इस पहल का उद्देश्य देश में स्टार्टअप्स और नये विचारों के लिए एक मजबूत परिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हों। स्टार्टअप इंडिया स्टैंडअप इंडिया है, जिसकी घोषणा प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2015 के भाषण में की गयी थी। ये पहल युवाओं को उद्योगपति और उद्यमी बनने का अवसर प्रदान करने के लिये भारतीय प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी द्वारा की गयी है जिसके लिये एक स्टार्टअप नेटवर्क को स्थापित करने की आवश्यकता है। स्टार्टअप का अर्थ, देश के युवाओं को बैंको के माध्यम से वित्त प्रदान करना है जिससे उनकी शुरुआत बेहतर मजबूती के साथ हो ताकि वो भारत में अधिक रोजगार सृजन कर सकें।

स्टार्टअप एक्शन प्लान का संक्षेपण

स्टार्टअप योजना को प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने इसका एक्शन प्लान या कार्ययोजना को दर्शाया है जिसका



उद्देश्य स्टार्टअप योजना के सभी पहलूओं को समाहित करता है। सरकार द्वारा इस संबंध में घोषित कार्य योजना स्टार्टअप परिस्थितिकी तंत्र के सभी पहलूओं को संबोधित करने और इस आंदोलन के प्रसार में तेजी लाने की उम्मीद करती है।

स्टार्टअप एक्शन प्लान मुख्य रूप से इन तीन बृहद भागों में विभाजित है :-

1. सरलीकरण और प्रारंभिक सहायता।
2. समर्थन और प्रोत्साहन अनुदान।
3. उद्योग-शैक्षिकजगत (एकेडेमिया) भागीदारी और उद्भवन।

स्टार्टअप की परिभाषा (केवल सरकारी योजनाओं के लिए)

स्टार्टअप एक इकाई है, जो भारत में पांच साल से अधिक से पंजीकृत नहीं है और जिसका सालाना कारोबार किसी भी वित्तीय वर्ष में 25 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है। यह एक इकाई है जो प्रौद्योगिकी या बौद्धिक सम्पदा से प्रेरित नये उत्पादों या सेवाओं के नवाचार, विकास, प्रविस्तारण या व्यवसायीकरण की दिशा में काम करती है। यह इकाई पहले से अस्तित्व में व्यापार के विखंडन / पुनर्निर्माण द्वारा गठित नहीं की गई हो। यह इकाई एक स्टार्टअप के तौर पर नहीं मानी जाएगी यदि पिछले वित्तिय वर्ष में उसका कारोबार 25 करोड़ रुपये से अधिक हो या उसने गठन की तिथि से 5 वर्ष पूरा कर लिया हो। यह स्टार्टअप अंतर मंत्रालयी बोर्ड से प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद कर लाभ के लिए योग्य होगा।

स्टार्टअप एक्शन प्लान

1. सरलीकरण और प्रारंभिक सहायता

<u>स्व–प्रमाणन पर आधारित अनुपालन व्यवस्था</u>

इसका उद्देश्य स्टार्टअप पर नियामक का बोझ कम करना है ताकि वे अपने मुख्य कारोबार पर ध्यान केंद्रित कर सकें और अनुपालन की लागत कम रख सकें। नियामक व्यवस्थाएं इस प्रकार और सरल एवं लचीली होंगी तथा निरीक्षण अधिक सार्थक एवं सरल होगा।

स्टार्टअप इंडिया हब

पूरे स्टार्टअप परिस्थितिकी तंत्र के लिए एक संपर्क स्थान का निर्माण जिससे ज्ञान का आदान-प्रदान एवं वित्त पोषण हो सकें। सरकार मुख्य हितधारक होगी एवं केंद्र तथा राज्य सरकारों, भारतीय और विदेशी पूंजीपतियों, एंजेल नेटवर्क, बैंकों, इनक्यूबेटरों, कानूनी भागीदारों, सलाहकारों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के साथ मिलकर काम करेगी।

मोबाइल एप्लिकेशन और पोर्टल का रोल आउट करना

सरकार और नियामक संस्थानों के साथ स्टार्टअप के लिए एक इंटरैक्टिव मंच के रुप में कार्य करेगा। 1 अप्रैल, 2016 से यह सभी प्रमुख मोबाइल / स्मार्ट डिवाइस प्लेटफार्मों पर उपलब्ध है।

कानूनी सहायता और कम दर पर तेजी से पेटेंट परीक्षण

बौद्धिक संपदा अधिकार को बढ़ावा देने और जागरुकता लाने एवं नये स्टार्टअप के सतत विकास और तरक्की को सुनिश्चित करने के लिए, यह योजना पेटेंट दाखिल करने के कार्य को आसान कर देता है।

स्टार्टअप के लिए सार्वजनिक खरीद के शिथिलीकृत मानदंड

इसका उद्देश्य अनुभवी कंपनियों की तुलना में स्टार्टअप के लिए समान अवसर प्रदान करना है। सरकार या सार्वजनिक उपक्रमों के द्वारा जारी निविदाओं के मामले में गुणवत्ता मानकों में छूट के बिना स्टार्टअप को 'पूर्वानुभव / टर्नओवर' के मानदंडों में छूट दी जाती है।

स्टार्टअप के लिए त्वरित निकासी

यह कार्य योजना स्टार्टअप के लिए असफलता की स्थिति में संचालन को बंद करने में आसानी प्रदान करेगा। स्टार्टअप के लिए एक इंसोल्वेंसी प्रोफेशनल प्रदान किया जाएगा जो छह महीने के समय में लेनदारों के भुगतान के लिए कंपनी की संपत्तियों को बेचने का प्रभारी होगा। यह प्रक्रिया सीमित देयता की अवधारणा को स्वीकार करेगी।

2. समर्थन और प्रोत्साहन अनुदान

स्टार्टअप के लिए धन की व्यवस्था

सरकार प्रति वर्ष 2500 करोड़ रुपये की एक प्रारंभिक निधि और 4 साल की अवधि में कुल 10,000 करोड़ रुपये की निधि की स्थापना करेगी।

स्टार्टअप के लिए क्रेडिट गारंटी

स्टार्टअप के लिए वेंचर ऋण उपलब्ध कराने के लिए बैंकों और अन्य उधारदाताओं को प्रोत्साहित करने के लिए, राष्ट्रीय क्रेडिट गारंटी ट्रस्ट कंपनी (NCGTC) के माध्यम से क्रेडिट गारंटी तंत्र / सिडबी द्वारा प्रति वर्ष 500 करोड़ के बजट का प्रावधान अगले चार साल के लिए करने का विचार किया जा रहा है।

कैपिटल गेन पर कर में छूट

स्टार्टअप में निवेश को बढ़ावा देने के लिए सरकार उनको कैपिटल गेन में छूट देगी जिनको वर्ष के दौरान पूंजीगत लाभ हुआ है और जिन्होंनें सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त फंड ऑफ फंड्स में इस तरह के पूंजीगत लाभ का निवेश किया है।

स्टार्टअप को तीन वर्ष के लिए टैक्स छूट

भारत में स्टार्टअप की कार्यशील पूंजी आवश्यकता को संबोधित करने, विकास को प्रोत्साहित करने और उन्हें एक प्रतियोगी मंच प्रदान करने के लिए स्टार्टअप के मुनाफे को 3 वर्ष की अवधि के लिए कर से मुक्त रखा जाता है।

उचित बाजार मूल्य पर निवेश में टैक्स छूट

स्टार्टअप में इनक्यूबेटरों द्वारा निवेश पर निवेश कर से मुक्त रखा जाता है।

3. उद्योग-शिक्षा जगत (एकेडेमिया) भागीदारी और उद्भवन

अभिनव नई खोज के प्रदर्शन एवं सहयोग मंच प्रदान करने के लिए स्टार्टअप उत्सवों का आयोजन

भारत में स्टार्टअप परिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्टार्टअप उत्सव शुरु करने का प्रस्ताव किया है । यह संभावित निवेशकों, परामर्शदाताओं और साथी स्टार्टअप को सम्मिलित करते हुए एक व्यापक जन समुदाय के समक्ष उनके काम और विचारों का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच है।

अटल अभिनव मिशन (एआईएम) का स्व रोजगार और प्रतिभा उपयोग (सेतु) प्रोग्राम के साथ लॉन्च

यह विशेष रुप से प्रौद्योगिकी संचालित क्षेत्रों में विश्व स्तर के नवाचार हब, भव्य चुनौतियां, स्टार्टअप कारोबार और अन्य स्वरोजगार गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रुप में काम करता है।

इन्क्यूबेटर सेटअप के लिए निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता का उपयोग

सरकार सार्वजनिक निजी भागीदारी में देश भर में इन्क्यूबेटरों की स्थापना के लिए एक नीति और ढांचे का निर्माण किया जाता है।

राष्ट्रीय संस्थानों में अभिनव केंद्रों की स्थापना

देश में अनुसंधान एवं विकास के प्रयासों में वृद्धि के लिए सरकार राष्ट्रीय संस्थानों में नवाचार और उद्यमिता के 31 केंद्रों की स्थापना करेगी । छात्रों द्वारा स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए 13 केंद्रों को 50 लाख रुपये की वार्षिक वित्त सहायता 3 वर्ष के लिए प्रदान की जायेगी।

आई आई टी मद्रास में स्थापित अनुसंधान पार्क की तर्ज पर 7 नये अनुसंधान पार्कों की स्थापना

शिक्षाविदों और उद्योग के संयुक्त अनुसंधान एवं विकास के प्रयासों के माध्यम से सफल नवाचारों का विकास करने के लिए सरकार 100 करोड़ रुपये प्रति संस्थान के आरंभिक निवेश के साथ संस्थानों में 7 नए अनुसंधान पार्क की स्थापना करेगी। ये अनुसंधान पार्क आई आई टी मद्रास में स्थापित अनुसंधान पार्क की तर्ज पर होंगे।

जैव प्रौद्योगिकी सेक्टर में स्टार्टअप को बढ़ावा देना

भारत में जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र मजबूत विकास के पथ पर है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग वर्ष 2020 तक 2000 स्टार्टअप की स्थापना करने के लिए प्रति वर्ष करीब 300-500 नये स्टार्टअप की स्थापना के लिए प्रयासरत है।

छात्रों के लिए अभिनव केंद्रित कार्यक्रमों की शुरुआत

सरकार युवा छात्रों के बीच अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देगी और इसके लिए कार्यक्रमों जैसे अभिनव कोर, निधि (एक भव्य चुनौती कार्यक्रम), उच्चतर आविष्कार योजना आदि की शुरुआत की है। शुरुआत में ये योजनाएँ केवल आई आई टी के लिए लागू होंगी और प्रत्येक परियोजना 5 करोड़ रुपये तक की हो सकती है।

वार्षिक इन्क्यूबेटर ग्रैंड चैलेंज

इन्क्यूबेटर्स एक प्रभावी स्टार्टअप परिस्थिति की तंत्र का निर्माण करने के लिए प्रारंभिक चरण में स्टार्टअप की पहचान करने और उन्हें अपने जीवन चक्र के विभिन्न चरणों में समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकार पहले चरण में विश्व स्तर के इन्क्यूबेटरों के निर्माण की दिशा में निवेश करने का प्रस्ताव कर रही है। शुरुआती लक्ष्य ऐसे 10 इन्क्यूबेटरों की स्थापना करना है। इनमें से प्रत्येक को वित्तीय सहायता के रुप में 10 करोड़ रुपये दिये जायेंगे और ये इस तरह के अन्य इन्क्यूबेटरों के लिए संदर्भ मॉडल बनेंगे। इसके बाद इनको स्टार्टअप इंडिया पोर्टल पर प्रदर्शित किया जाएगा। ऐसे इन्क्यूबेटरों की पहचान के लिए ग्रैंड चैलेंज प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी और इसे वार्षिक रुप से जारी रखा जाएगा।

योजना की प्रमुख बातें

1. स्टार्टअप कारोबारियों द्वारा कमाये जाने वाले मुनाफे पर व्यवसाय शुरु होने के पहले तीन साल तक इनकम टैक्स से छूट होगी।
2. ऐसे उद्यमों में वित्तपोषण को बढ़ावा देने के लिए उद्यमियों द्वारा किए गए निवेश के बाद अपनी संपत्ति बेचने पर 20% की दर से लगने वाले पूंजीगत लाभ टैक्स से भी छूट होगी। यह छूट सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त उद्यम पूंजीकोषों के निवेश पर भी उपलब्ध होगी।
3. सरकार का 'स्टार्टअप इंडिया' कार्यक्रम देश में नवोन्मेष को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाता है ताकि आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके और देश में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर मुहैया कराए जा सकें।
4. सरकार की ओर से एक राष्ट्रीय ऋण गारंटी ट्रस्ट कंपनी बनाने का प्रस्ताव है जिसमें अगले चार साल तक सालाना 500 करोड़ रुपये का बजट आवंटन किया जाएगा।
5. देश में नवप्रवर्तन सोच के साथ आने वाले तकनीक आधारित इन नये उद्यमों के लिये एक उदार पेटेंट व्यवस्था भी लाई जाएगी। पेटेंट पंजीकरण में इन उद्यमों को पंजीकरण शुल्क में 80% छूट दी जायेगी।
6. प्रधानमंत्री जी के अनुसार दिवाला कानून में स्टार्टअप उद्यमों को कारोबार बंद करने के लिए सरल निर्गम विकल्प देने का प्रावधान भी किया जायेगा। इसके तहत 90 दिन की अवधि में ही स्टार्टअप अपना कारोबार बंद कर सकेंगे।
7. छात्रो के लिए इनोवेशन के कोर्स शुरु किये जायेंगे और 5 लाख विद्यालयों में 10 लाख बच्चों पर फोकस करके इसको बढ़ाया जायेगा।
8. प्रधानमंत्री जी ने कहां कि स्वःप्रमाणन आधारित अनुपालन व्यवस्था से स्टार्टअप पर नियामकीय बोझ कम होगा। स्वःप्रमाणन अनुपालन की यह व्यवस्था कर्मचारियों को ग्रेच्युटी भुगतान, ठेका कर्मचारी, कर्मचारी भविष्य निधि कोष, पानी और वायु प्रदूषण कानूनों के मामले में उपलब्ध होगी।
9. स्टार्टअप को वित्तपोषण का समर्थन देने के लिये सरकार 2,500 करोड़ रुपये का शुरुआती कोष बनाएगी जिसमें अगले 4 साल के दौरान कुल 10,000 करोड़ रुपये का कोष होगा।
10. दुनियाभर में स्टार्टअप की तीसरी बड़ी संख्या भारत में है। सरकार इन उद्यमों को सरकारी खरीद ठेके लेने के मामले में भी मानदंड में कई तरह की छूट देगी। स्टार्टअप उद्यमों को सरकारी ठेकों में अनुभव और कारोबार सीमा के मामले में छूट दी जायेगी।
11. इसमें महिलाओं के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है।

इस प्रकार स्टार्टअप इंडिया योजना से अवश्य ही मजबूती मिलेगी और देश की प्रगति होगी।



वर्तमान में अनुवाद कार्य की आवश्यकता और महत्त्व

डॉ. महेंद्र जैन मुकुर

कहते हैं आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है, ऐसी ही कुछ कुछ अनुवाद के प्रारंभ होने की कहानी है। भाषाओं का आविष्कार लगभग छह हजार साल पहले का माना जाता है। ऐसा भी कहा जाता है कि तब दुनिया के सभी मनुष्य एक ही भाषा बोलते थे। अनुवाद के आरंभ के संबंध में बैबेल (Babel) की दिलचस्प कहानी प्रचलित है। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन कुछ लोगों ने मिलकर एक विशाल निर्माण कार्य करने के बारे में सोचा और एक ऊँची मीनार बनाना शुरु कर दिया सब के सब इस काम में जुट गए और मीनार लगातार ऊंची से ऊंची बढ़ने लगी। मीनार को ऊंचा उठते देख स्वर्ग में बैठे देवताओं को खतरा महसूस हुआ कि कहीं ऐसा ना हो कि मनुष्य अपने परिश्रम के सहारे ऊपर बढ़ता चला जाए और उसकी मीनार स्वर्ग में प्रवेश कर जाए। उनके सामने यह बहुत बड़ी समस्या पैदा हो गई। वे सभी सोचने लगे कि क्या किया जाए और इस काम में बिघ्न पड़े, उन्होंने इस समस्या का बहुत ही चतुराई पूर्ण समाधान खोजा। उन्होंने मीनार बनाने वालों को अलग-अलग भाषाएं दे दीं, परिणाम यह हुआ कि एकजुट लोग विभाजित होने लगे, सब अपना अपना राग अलापने लगे, कोई किसी की बात को नहीं समझ पा रहा था, एक दूसरे से संवाद टूट गया था, जो संगठित होकर मीनार बनाने का काम कर रहे थे, वे सभी रुक गये, अजीबसा कोलाहल पैदा हो गया और मीनार अधूरी रह गई। इस अधूरी मीनार को बैबेल (Babel) की मीनार कहा गया। बैबेल (Babel) का शाब्दिक अर्थ होता है हड़बड़ी, खलबली या कोलाहल हिंदी की विभिन्न बोलियों में इससे मिलता जुलता एक शब्द और मिलता है जिसे बाबेला या बबाल कहा जाता है। ग्रामीण भाषा में बबाल मच जाएगा ऐसा भी सुनने को मिलता है। बैबेल की मीनार की यह घटना मानवीय संप्रेषण पर हुआ कुठाराघात मानी जाती है किंतु किन्हीं कारणों से यह एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा वालों को समझने के लिए वरदान भी सिद्ध हुआ।

बीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया है। यद्यपि अनुवाद सबसे प्राचीन व्यवसाय या व्यवसायों में से एक कहलाता है तथापि उसे जो महत्त्व बीसवीं सदी में प्राप्त हुआ वह उससे पहले नहीं मिला ऐसा माना जाता है। वर्तमान युग में अधिकतर राष्ट्रों में यदि एक भाषा प्रधान है तो एक या अधिक भाषाएँ गौण दिखाई देती हैं। दूसरे शब्दों में, एक ही राजनीतिक-प्रशासनिक इकाई की सीमा के अन्तर्गत भाषायी बहुसंख्यक भी रहते हैं और भाषायी अल्पसंख्यक भी। लोकतन्त्र में सब लोगों का प्रशासन में समान रुप से भाग लेने का अधिकार तभी सार्थक माना जाता है, जब उनके साथ उनकी भाषा के माध्यम से सम्पर्क किया जाए। इससे बहुभाषिकता की स्थिति उत्पन्न होती है और उसके संरक्षण की प्रक्रिया में अनुवाद कार्य का आश्रय लेना अनिवार्य हो जाता है।

इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना प्रबल रुप से विकसित हुई है। उत्तर-आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुनः कथन' से लेकर आज 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरुप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वांतः सुखाय' माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रुप में अवश्य महसूस की जा रही है

और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

बीसवीं शताब्दी के अवसान और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चिन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों। अनुवाद के महत्त्व को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है -

विश्व संस्कृति में अनुवाद का महत्त्व

विश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। यूनान, मिस्त्र, चीन आदि की प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है और इस संबंध में अनुवाद की विशेष महत्ता रही है। बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार समूचे एशिया में अनुवाद की जीवंत परंपरा का परिणाम है। विश्व भर में गीता तथा उपनिषद के ज्ञान का अनुवाद अपने ढंग से किया जाता रहा है। पंचतंत्र के लघु संग्रहों का अनुवाद अरबी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ है। वास्तव में अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों को जानने व समझने में इसकी निश्चित रुप से भूमिका सिद्ध हो । विश्व की सांस्कृतिक एकता में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। आज की भारतीय संस्कृति जिसे हम सामासिक संस्कृति कहते हैं उसके निर्माण में हजारों वर्षों के विभिन्न धर्मों, मतों एवं विश्वासों की साधना छिपी हुई है। इन सभी मतों एवं विश्वासों को आत्मसात कर जिस भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है उसके पीछे अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका असंदिग्ध है। अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विभिन्न राष्ट्रों की सांस्कृतिक निधियां आज हमारे सामने हैं। अनुवाद के माध्यम से ही हम एक दूसरे की सांस्कृतिक विरासत के भागीदार बनें हैं।

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

साहित्य के अनुवाद का इतिहास काफी प्राचीन है। अनुवाद ने ना केवल विभिन्न साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्कि भाषा के विकास में भी इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। विश्व के विभिन्न साहित्य के बीच जो परस्पर आदान-प्रदान हुआ वह अधिकांशतः अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। इसके माध्यम से अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने से जिन नई अभिव्यक्तियों, संवेदनाएं, विचारधाराओं से जीवन की अनुभूतियों और साहित्य शैलियों का परिचय मिलता है वह हमारे जीवन के साथ-साथ हमारी चिंतन शक्ति और साहित्य सृजनो को भी प्रभावित करती हैं। विभिन्न भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन में भी अनुवाद से काफी सहायता मिली है। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्त्व आज व्यापक हो गया है। साहित्य यदि जीवन और समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करता है तो विभिन्न भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से किसी भी समाज, देश या विश्व की चिन्तन-धारा एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है। अनुवाद का महत्त्व निम्नलिखित साहित्यों के अध्ययन में सहायक है -

भारतीय साहित्य का अध्ययन, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन और विभिन्न भाषाओं में लिखे साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

भारतीय साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि विभिन्न साहित्यक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों में हिंदी एवं हिंदीतर भाषा के साहित्यकारों का स्वर प्रायः एक जैसा रहा है। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन, स्वतंत्रता आंदोलन तथा नक्सलबाड़ी आंदोलनों को प्रायः सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में अभिव्यक्ति मिली है। एक समय था जब ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों की धूम मची थी। ऐसा कहा जाता है कि देवकीनंदन खत्री के तिलिस्मी उपन्यास चंद्रकांता संतति को पढ़ने के लिए हजारों लोगों ने हिंदी सीखी। बाद में इसका अनुवाद अधिकांश भाषाओं में हो गया एक समय है हैरी पॉटर जैसी ख्याति पाने वाले चंद्रकांता संतति के कई ऐसे शब्द हैं जो लोगों की जुबान पर चढ़े हुए थे।

अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अनुवाद से ही यह तथ्य प्रकाश में आया कि दुनिया के विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य में ज्ञान का विपुल भण्डार छिपा हुआ है। भारत में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अनुवाद तो भारत में सूफियों के दार्शनिक सिद्धांतों के प्रचलन के साथ ही शुरु हो गया था; किंतु इसे व्यवस्थित स्वरुप आधुनिक युग में ही प्राप्त हुआ। शेक्सपियर, डी. एच. लॉरेंस, मोपासाँ तथा सार्त्र जैसे चिंतकों की रचनाओं के अनुवाद से भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ एवं कालिदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं

प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, महादेवी आदि कई साहित्यकारों की रचनाओं से विश्व प्रभावित हुआ।

विश्व में प्रचलित विभिन्न भाषाओं के अनुवाद द्वारा ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता मिलती है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा इस बात का पता लगाया जाता है कि देश, काल और समय की भिन्नता के बावजूद विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य में साम्य और वैषम्य क्यों हैं ? अनुवाद के द्वारा ही जो तुलनीय है वह तुलनात्मक अध्ययन का विषय बनता है। प्रेमचंद और गोर्की, निराला और इलियट तथा राजकमल चौधरी एवं मोपासाँ के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के फलस्वरुप ही सम्भव हो सका।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व

संवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मिलता है। अनुवाद से मिलने वाले ज्ञान ने मनुष्य के समाजशास्त्र को एक देश की सीमा से निकाल कर दूसरे देश तक पहुंचाया है। संस्कृत और यूनानी साहित्य कला और दर्शन के प्रचार-प्रसार का श्रेय अनुवाद को ही जाता है। आधुनिक नवजागरण काल में पश्चिम के नए ज्ञान विज्ञान से हमारे ज्ञान और चेतना के विकास में अनुवाद ही सबसे बड़ा सहारा बना है। विश्व के सभी विकसित देशों की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीपरक विकास में अनुवाद की उल्लेखनीय भूमिका रही है। आज विज्ञान के तेजी से बदलते हुए विश्व में आधुनिक प्रौद्योगिकी, विज्ञान, चिकित्सा, कृषि आदि के क्षेत्र में हो रहे नए नए अविष्कारों और अनुसंधान हमसे जुड़े रहने के लिए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है।

व्यावसायिक क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका

वर्तमान युग में अनुवाद ज्ञान की ऐसी शाखा के रुप में विकसित हुआ है जहाँ इज्जत, शोहरत एवं पैसा तीनों हैं। आज अनुवादक दूसरे दर्जे का साहित्यकार नहीं बल्कि उसकी अपनी मौलिक पहचान है, उसे एक सम्मानित व्यक्ति के नजरिये से देखा जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हुए विकास के साथ भारतीय परिदृश्य में कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अभियांत्रिकी और व्यापार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का भारतीयकरण कर इन्हें लोकोन्मुखी बनाने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद को महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन करता है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात केंद्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों और प्रतिष्ठानों में राजभाषा प्रभाग की स्थापना हुई जहाँ अनुवाद कार्य में प्रशिक्षित हिंदी अनुवादक एवं हिंदी अधिकारी कार्य करते हैं। आज रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद सबसे आगे है। प्रति सप्ताह अनुवाद से सम्बन्धित जितने पद यहाँ विज्ञापित होते हैं अन्य किसी भी क्षेत्र में नहीं।

व्यापारिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व

प्राचीन काल से ही यह देश-विदेश में वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। प्राचीन काल से ही भारत और चीन और यूरोप में व्यापारी लोग अपने व्यापार के लिए देश-विदेश जाया करते थे और अनुवाद के सहारे ही व्यापार और वाणिज्य करते थे। वर्तमान समय में भी व्यापारी अपने उत्पादों और वस्तुओं की गुणवत्ता और उनके उत्तर विक्रय के संवर्धन के लिए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। विश्व स्तर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की पैठ अनुवाद के सहारे ही जम पाई है। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उत्पादों और माल को खपाने की प्रतिस्पर्धा में तथा आगे बढ़ने के लिए भी अनुवाद का महत्त्व बढ़ जाता है। विज्ञापन और पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद की बढ़ती भूमिका व्यापारिक विकास में अनुवाद के महत्त्व का सबसे बड़ा उदाहरण है।

राष्ट्रीय एकता के विकास में अनुवाद का महत्त्व

भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग मे अनुवाद की आवश्यकता असंदिग्ध है। भारत की भौगोलिक सीमाएँ न केवल कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी हुई हैं बल्कि इस विशाल भूखण्ड में विभिन्न विश्वासों एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं जिनकी भाषाएँ एवं बोलियाँ एक दूसरे से भिन्न है। भारत की अनेकता में एकता इन्हीं अर्थो में है कि विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों, विभिन्न सम्प्रदायों एवं विभिन्न विश्वासों के देश में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता कहीं भी बाधित नहीं होती। एक समय में महाराष्ट्र का जो व्यक्ति सोचता है वही हिमाचल का निवासी भी चिंतन करता है। भारत के हजारों वर्षों के अद्यतन इतिहास चिंतन ने इस

धारणा को पुष्ट किया है कि मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन से लेकर आज के प्रगतिशील आंदोलन तक भारतीय साहित्य की दिशा एक रही है। यह बात अनुवाद के द्वारा ही सम्भव हो सकी कि जिस समय गोस्वामी तुलसीदास राम के चरित्र पर महाकाव्य लिख रहे थे, हिंदी के समानान्तर ओड़िआ में बलराम, बांग्ला में कृत्तिवास, तेलुगु में पोतना, तमिल में कम्बन तथा हरियाणवी में अहमदबख्श अपने-अपने साहित्य में राम के चरित्र को नया रुप दे रहे थे। स्वतंत्रता आंदोलन में जिस साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के विरोध की चिंगारी सुलगी थी उसका उत्कर्ष छायावादी दौर की विभिन्न भारतीय भाषाओं की कविता में मिलता है।

मीडिया और सिनेमा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

कोई भी समाचारपत्र, रेडियो एवं टीवी चैनल ऐसा नहीं है, जिसमें हमें अनुवाद की आवश्यकता महसूस न होती हो। सिनेमा भी अनुवाद का सहारा लेकर बुलंदियों को छू रहा है। टाइटेनिक फिल्म इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। अनुवाद को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने नेशनल ट्रांसलेशन मिशन का गठन किया है। मीडिया के सभी क्षेत्रों में चाहे वह हिंदी/अंग्रेजी/भारतीय भाषा के समाचार हों या चैनल हों, सभी जगह अनुवाद अहम भूमिका निभाता है। अंग्रेजी अखबारों के संवाददाताओं को भी समाचार-संकलन के दौरान, साक्षात्कार करते या भाषण की रिपोर्ट करते हुए, दुर्घटना स्थल में जाकर स्टोरी बनाते हुए कई बार अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। संवाददाताओं से लेकर संपादक तक सभी को किसी न किसी स्तर में अनुवाद करना ही पड़ता है। सफल पत्रकार बनने के लिए पत्रकारिता के साथ अनुवाद में दक्ष होना आवश्यक है। फिल्मों की कई भाषाओं में डबिंग अनुवाद के द्वारा ही होती है। मीडिया का काम अनुवाद के बिना नहीं हो सकता है। मीडिया की तरह अनुवाद भी सर्वव्यापी है अतः दोनों में गहरा अंत-संबंध है।

चलचित्रों (फिल्मों) में डबिंग के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व और अधिक बढ़ गया है। डबिंग एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को दर्शकों तक पहुँचाने का माध्यम है। आज डबिंग का महत्व मनोरंजन के हर क्षेत्र में दिखाई दे रहा है, चाहे वह कार्टून फिल्म हो, एनिमेशन फिल्म हो, फीचर फिल्म हो या कुछ और किपलिंग की पुस्तक 'जंगल बुक' का मोगली 'जंगल-जंगल बात चली है, चड्डी पहन के फूल खिला है' हिंदी में गाते हुए बच्चों के समक्ष टेलीविजन पर आता था तब वे टेलीविजन से ऐसे चिपक जाते थे कि उन्हें अपनी मुंह मांगी हुई कोई वस्तु मिल गई हो। यहीं प्रमाद आज बच्चों को 'डोरेमन', 'सिनचॉन', 'बार्बी', 'निंजा हथौड़ी', 'ऑगी एंड काकरोच', 'टोम एंड जेरी', 'छोटा भीम' जैसे अन्य कार्टून फिल्म या एनिमेशन फिल्म देखकर मिलता है। इसी तरह जापान में बनी 'रामायण' और अंग्रेजी में बनी 'अलादीन' को बच्चे अपनी भाषा में देखकर गौरवान्वित महसूस करते है। डबिंग के माध्यम से ही डिस्कवरी और नेशनल ज्योग्राफिक चैनलों की पहुँच भारत के कोने-कोने में हुई है। पिछले कुछ वर्षों से हिंदी में अंग्रेजी से डब की गई अनेक फिल्में प्रदर्शित हुई है। यही नहीं दक्षिण भारतीय भाषाओं में बनी फिल्में आज प्रत्येक टी.वी. चैनल में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में देखी जा सकती हैं।

संक्षिप्त में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुवाद विश्व-संस्कृति, विश्व-बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का एक ऐसा सेतु है जिसके माध्यम से विश्व ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रवाद के संकुचित एवं सीमित दायरे से बाहर निकल कर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केंद्र बिंदु तक पहुँच सकता है और यही अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का सशस्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है। बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच की दूरियाँ कम होने के परिणामस्वरुप विभिन्न वैचारिक धरातलों और आर्थिक, औद्योगिक स्तरों पर पारम्परिक भाषिक विनिमय बढ़ा है और इस विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अधिक किया जाने लगा है। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्त्वपुर्ण हो गया है। यदि हमें दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है तो हमें उनके यहाँ विज्ञान के क्षेत्र में, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी होनी चाहिए और यह जानकारी हमें अनुवाद के माध्यम से मिलती है। संचार माध्यमों में गतिशीलता बढ़ाने का कार्य अनुवाद द्वारा ही सम्भव हो सका है तथा गाँव से लेकर महानगरों तक जो भी अद्यतन सूचनाएँ हैं वे अनुवाद के माध्यम से सभी तक पहुँच रही हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुवाद ने आज पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया है।

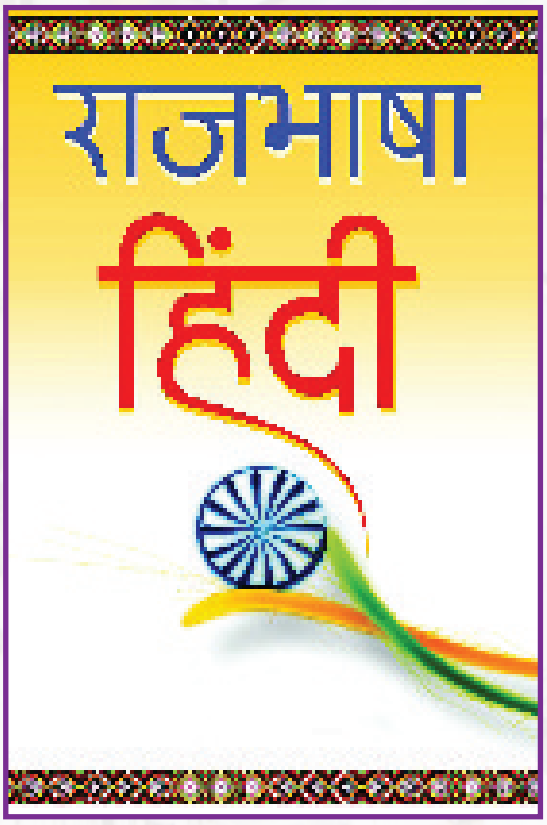


कुंदन सिंह
कार्यालय अधीक्षक

भाषा-प्रौद्योगिकी का स्वरुप

भारत एक बहुभाषी और जनसंख्या-बहुल राष्ट्र है। इस देश की 98 प्रतिशत से अधिक जनता हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं पर निर्भर है। भारत में 22 संबैधानिक भाषाएँ हैं, जिनमें लगभग 1650 बोलियाँ हैं। ये सब भाषाएँ दस लिपियों में लिखी जाती हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी के वर्तमान दौर में अब निम्नलिखित व्यवस्थाएँ आवश्यक हो गई हैं -

1. भारतीय भाषाओं में 'डिजिटल पुस्तकालय' बनाए जाएँ।
2. पोर्टल का विकास किया जाए, ताकि भाषा-संसाधन को गति मिले।
3. अंतरभाषिक अनुवाद को बढ़ावा दिया जाए।
4. कंप्यूटर द्वारा स्मृति भाषांतरण और संक्षेपण का कार्य सुगम बनाया जाए।
5. मशीन साधित मौखिक (आशु) अनुवाद की व्यवस्था की जाए।
6. अक्षरों की पहचान, वाणी की पहचान, संभाषण और समझ मशीन द्वारा विकसित हो जाए।
7. भाषिक कंप्यूटरीकरण का अधिकाधिक प्रशिक्षण दिया जाए।
8. यंत्रों द्वारा भाषा-संस्कार को सर्वसंभव बनाया जाए।
9. रोमन लिपि से भारतीय लिपियों में मानकीकृत लिप्यंतरण हो सके और इस प्रकार व्याकरण, वर्तनी, लिपि और उच्चारण का मानकीकरण हो जाए।



इसके लिए आवश्यक है कि भाषा को 'प्रौद्योगिकी' रुप में गठित किया जाए। भाषा प्रौद्योगिकी के अंतर्गत कंप्यूटर द्वारा अनेक कार्य संपादित किए जा सकते हैं। जैसे - 1. शब्द-संचय या शब्द-भंडारण, 2. अनुक्रम-समानुक्रम अर्थात शब्दों-वाक्यों की क्रमबद्धता, 3. विच्छेदन (पार्सिंग), 4. अंतरण या अनुवाद, 5. संशोधन (स्पेलचेक), 6. इंटरलिंग्वा अर्थात अंतरभाषिकता।

कंप्यूटर के माध्यम से स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में मानव और मशीन-साधित अनुवाद अब संभव हो गया है। 'जिस्ट' नामक सॉफ्टवेयर ने इस दिशा में यथेष्ट सफलता प्राप्त कर ली है। हिंदी में 'बेसिक कोबोल' अर्थात सामान्य

कामकाजी भाषा और 'फोट्रॉन' अर्थात फॉर्मूला ट्रांसलेशन की पूरी संभावना उद्घाटित हो चली है। इंटरनेट द्वारा अनेक डिजिटल साइबर, ऑप्टिक और वेबसाइट विकसित हो गए हैं। 'माइक्रोसॉफ्ट' की भी इसमें अनेक संभावनाएँ हैं। इंटरनेट पर अब टेलीफोन और मोबाइल टेलीफोन की शुरुआत हो गई है। धीरे-धीरे 'इंटरस्पेस' की संकल्पना बढ़ती जा रही है। पूरे विश्व में लगभग 16,000 भाषाएँ हैं, जिनमें 300 विश्व-भाषाएँ हैं, जिनका प्रयोग 95 प्रतिशत जनता करती है। इनमें अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन, जापानी आदि का कंप्यूटरीकरण सबसे आगे है। इन भाषाओं में सृजनात्मक रुप घट रहा है और कामकाजी रुप बढ़ रहा है। विडंबना यह है कि अभी 'इंटरनेट' पर अधिकांश जानकारी अंग्रेजी के माध्यम से ही मिलती है। देवनागरी लिपि के प्रयोक्ता 22 प्रतिशत व्यक्ति पुरे संसार में फैले हैं, किंतु अभी इसमें इंटरनेट का प्रयोग लगभग 0.3 प्रतिशत ही हो रहा है, इसलिए यहाँ अंग्रेजी ही संपर्क-भाषा बनी हुई है।

भारत में भाषा-प्रौद्योगिकी का विकास 1976 से क्रमशः बढोतरी पर है। यहाँ कुछ वर्षों से 'कोवायल नेट' भी शुरु हो गया है। संप्रति हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद को प्राथमिकता दी जा रही है। 'मंत्र' द्वारा कार्यालयी आदेशों का हिंदी - अनुवाद तेजी से चल रहा है। यूनिकोड के कारण इस दिशा में क्रांति हो गई है। नए भाषिक विकास के लिए आवश्यक है कि वाक्य-संरचना, शब्दानुवाद, संयुक्त क्रिया, संज्ञा-प्रयोग, व्याकरणिक समन्वय और सूचना-प्रसारण को निरंतर प्रश्रय दिया जाए। सूचना-प्रसारण के क्षेत्र में हमारे देश में 'मल्टीमीडिया' आज काफी सक्रिय है। इसके माध्यम से टेलीप्रिंटर, टेलीग्राफ, टेलेक्स, वायरलेस, रडार, रेडियो फोनिंग, टी. वी. कॉन्फ्रेंसिंग, डबिंग, परिगणन, ग्राफिक्स, रुपांतरण, भावांतरण, संदर्भ-चयन, कोलाज, पेजिंग और कृत्रिम चिंतन तक के कार्य होने लगे हैं। कंप्यूटर अब परिकलन-अभिकलन के अतिरिक्त 'शब्द-संसाधन' और 'डाटा-संसाधन' के कार्य भी करता है। 'देवदास' और 'लोटस' को इस दिशा में काफी सफलता मिली है। स्मृति (मेमोरी) के क्षेत्र में सी. डी. रोम और रैम दोनों ही प्रचलित हैं। गत दशक में हिंदी में भी अनेक प्रकार के सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर विकसित हो गए हैं, जो अनुप्रयोग और कार्यप्रणाली, दोनों में उपयोगी हैं। इस क्षेत्र में आई. आई. टी. कानपुर का 'जिस्ट' और 'सी-डैक' का 'परम' काफी सफल हुआ है।

हिंदी-मुद्रण के क्षेत्र में कंप्यूटर के कारण नई क्रांति आ गई है। सैकड़ो प्रकार के 'फॉण्ट्स' विकसित हो गए हैं। डॉटमेट्रिक्स, इंकजेट, लेजर, डी.टी.पी. आदि कई मुद्रण-प्रणालियाँ संप्रति हिंदी में प्रचलित हैं। 'विंडोज' और 'कोरल' को इस दिशा में बड़ी सफलता मिली है। रोमन से देवनागरी के लिप्यंतरण में 'अक्षर', 'शब्दमाला', 'आलेख', 'मल्टीवर्ड', 'सुलेख', 'शब्द रत्न', 'भारती' आदि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है।

भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में कंप्यूटर द्वारा उच्चारण, लिपि-शिक्षण और वाक्य-विन्यास का कार्य होता है। 'लीला' द्वारा प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम विकसित किए गए हैं। समेकित पारिभाषिक शब्दावली की खोज में, थिसारस के क्षेत्र में, व्युत्पत्ति की खोज में और अर्थ-बोधन में कंप्यूटर से विशेष सहायता मिलती है। भारत की सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री ने 'इन्फोसिस' और 'शब्दावली क्लब' निर्माण में पर्याप्त सफलता अर्जित की है।

इस भाषा-प्रौद्योगिकी का विकास अभी निम्नलिखित पाँच क्षेत्रों में अपेक्षित है -

1. **राजभाषा के क्षेत्र में** - इसके अंतर्गत द्विभाषी या बहुभाषी अनुवाद, पारिभाषिकों का निर्माण, कूट पद (कोड) का निर्माण, टंकण-आशुलेखन का विस्तार और भाषा का मानकीकरण अत्यावश्यक है। साथ ही प्रारुपण, टिप्पण, पत्राचार और कंप्यूटरीकरण का प्रशिक्षण भी।

2. **संचार–भाषा के क्षेत्र में** - इसमें 'मल्टीमीडिया' अर्थात मुद्रित शब्द-दृश्य माध्यम का विस्तार पहली आवश्यकता है। चाहे फीचर, रेडियो-वार्ता, भेंटवार्ता, रिपोर्ताज, रुपांतरण, टेलीड्रामा, टेलीफिल्म, डॉक्यूड्रामा, विज्ञापन, प्रचार-सामग्री, स्लोगन, पटकथा, संवाद आदि का लेखन-कार्य हो, चाहे पत्र-पत्रिकाओं का पृष्ठ-विन्यास-कार्य हो, चाहे वाचन कला, जैसे-कमेंट्री, संचालन,



उद्घोषणा, समाचार-वाचन, काव्य, कथा-वाचन, ब्लॉगिंग आदि से संबंधित कलाएँ हो ये सब प्रौद्योगिकी से संबंधित हैं।

3. **माध्यम–भाषा के क्षेत्र में** - इसके अंतर्गत कोश-निर्माण, विचारपरक लेखन, अध्यापन, अनुसंधान, भाषा-शिक्षण आदि कार्यों का विकास अपेक्षित है।

4. **रचना–कर्म के क्षेत्र में** - इसके अंतर्गत सृजन-प्रशिक्षण, नाट्यांदोलन, लोक साहित्य-संचयन, जनपदीय साहित्य-संकलन, पाठ-संपादन, समीक्षा आदि को बढ़ावा देना आज का युग-धर्म है।

5. **कामकाजी भाषा के क्षेत्र में** - हिंदी माध्यम से विपणन, जनसंपर्क, विधिक कार्रवाई आदि की व्यवस्था करना अभीष्ट है। इस क्षेत्र में पोस्टर, स्टीकर, बैनर, बधाई-पत्र, फोल्डर आदि की निर्माण-प्रविधि का संज्ञान प्राप्त करना अब आवश्यक हो गया है।

भाषा से जुड़े इन पाँचों प्रकार्यों की प्रविधि का प्रशिक्षण प्राप्त करना ही भाषा-प्रौद्योगिकी है। ये कार्य दैवी देन से नहीं, बल्कि अभ्यास द्वारा संभव हैं। काव्य, कथा, नाटक, समीक्षा आदि विधाओं में हम तकनीक का अध्ययन करते रहे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि ये सभी कार्य टेक्नोलॉजी के अंग हैं। अब चूँकि हिंदी भाषा-सृजन तक ही सीमित नहीं है, इसलिए इसकी प्रौद्योगिकी का भी परिविस्तार होना चाहिए। 'भाषा-प्रौद्योगिकी' नामक एक स्वतंत्र विषय का आविर्भाव इस युग की विशिष्ट देन है। इसके प्रमुख घटक हैं - (1) अनुवाद, (2) कोश-निर्माण, (3) वाक् कला, (4) कैसेट्स एवं कंप्यूटर बुक्स, (5) सृजन-प्रशिक्षण, (6) मीडिया-लेखन, (7) नए प्रयोजन।



लक्ष्मण अर्जुगडे
लिपिक, मासं अधिकारी

नई शिक्षा नीति

शिक्षा समाज की दिशा तथा दशा का निर्धारण करती है कहा जाता है कि अगर किसी देश तथा समाज में बड़े परिवर्तन करने हो तो शिक्षा में समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है।

जून 2017 में दूसरो के प्रमुख डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 11 सदस्य समिति का गठन किया गया था, जिसने मई 2019 शिक्षा नीति से सम्बंधित प्रारुप तैयार किया। नई शिक्षा नीति 2020 की परामर्श प्रक्रिया जारी रही। यह जनवरी 2019 से 31 अक्टूबर 2019 तक व्यापक स्तर पर सभी पहलुओं को सम्मिलित करते हुए इस पर चर्चा की गई तथा सुझाव लिए गए। इसे 29 जुलाई 2020 को पेश किया गया।

भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति जुलाई 1968 (कोठारी कमिशन) और दूसरी शिक्षा नीति 1968 में प्रस्तुत हुई। जिसमें 1990 तथा 1993 में संशोधन भी किए गए।

स्वतंत्रता के समय भारत में शिक्षा की स्थिति काफी कमजोर थी उस समय भारत की साक्षरता 15% से 20% थी। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता 74% है जो विश्व की साक्षरता 84% से काफी कम है भारत में महिला साक्षरता की स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। जिसका प्रतिशत केवल 54% है।

प्रमुख प्रावधान :

नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा शिक्षा के सभी स्तरों तथा गतिविधियों से सम्बंधित प्रावधान किए गए हैं। शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण तथा सार्वभौमिक शिक्षा के साथ ही व्यावसायिक शिक्षा पर भी बल दिया गया है। इसमें भारतीय संस्कृति की विविधता का उचित समावेश किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में 2030 तक सार्वभौमिक स्कूली शिक्षा तथा इस नीति को पूर्ण रुप से क्रियान्वित करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें छात्रों की क्षमताओं का आकलन करने पर जोर दिया गया न कि छात्रों को कितना याद रहता है।

- इस शिक्षा नीति के द्वारा 3 वर्ष से 14 वर्ष तक के विद्यार्थियों के लिए निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है।
- मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया। इसमें जी.डी.पी. का 6% शिक्षा पर खर्च किया जाएगा। इसके अलावा लगभग 2 करोड़ ड्रापआउट बच्चो को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जाएगा।
- 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा के स्थान पर 5+3+3+4 फार्मूला लागू किया जाएगा। जिसमें शुरुआती 3 वर्ष प्री प्राइमरी एजुकेशन के होंगे जिसमें आंगनबाड़ी शामिल होगे। इस प्रकार पहले 5 वर्ष में 3 वर्ष प्री प्राइमरी शिक्षा तथा पहली व दूसरी क्लास को शामिल किया गया है। उसके बाद तीसरी चौथी और पांचवी कक्षा को प्राथमिक शिक्षा में शामिल करते हुए मातृभाषा पर जोर दिया गया है तथा कक्षा 6 से 8 तक के 3 वर्षों में गणित, विज्ञान पर जोर देते हुए व्यावसायिक शिक्षा का आरम्भ किया जाएगा तथा स्कूली शिक्षा के अंतिम 4 वर्ष अर्थात 9,10,11 तथा 12वीं कक्षाओं में विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक विषय का चुनाव करने की छूट दी गई है तथा 12वी तक गणित, विज्ञान की अनिवार्यता को लागू किया जाएगा।

- 3 से 6 वर्ष की आयु वाले बच्चों के लिए अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन का प्रावधान किया गया है। नौवी से बारहवी तक सेमिस्टर प्रणाली आधारित मूल्यांकन होंगे। कक्षा 6 से प्रैक्टिकल बच्चों का विकल्प रहेगा। प्राथमिक शिक्षा के बच्चों के लिए बस्ते का बोझ कम करने तथा मातृभाषा के साथ गैर शैक्षणिक गतिविधियां खेल व योग पर बल दिया जाएगा।
- इस शिक्षा नीति के अनुसार रिपोर्ट कार्ड में विद्यार्थी के स्किल्स तथा अन्य गतिविधियों में उसकी भूमिका अर्थात सर्वांगीण विकास समग्रता रिपोर्ट कार्ड बनेगा, जिसमें अध्यापकों के साथ-साथ छात्रों का भी मूल्यांकन निहित होगा।
- उच्च शिक्षा में मल्टीपल एंट्री तथा मल्टीपल एग्जिट की सुविधा होगी। एम-फिल को समाप्त करने की बात कही गई है। क्योंकि भारत अब रिसर्च के अमेरिकी मॉडल की ओर बढ रहा है। एसआरए के गठन का प्रावधान है जिसके प्रमुख कोई शिक्षाविद होंगे।
- 4 ईयर यानी 3 साल के ग्रेजुएशन के साथ 1 साल की बी.एड., 2 ईयर बी.एड. या 1 ईयर बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित किए जाएंगे। 1 वर्षीय बी.एड. पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद की जा सकती है।
- टीईटी यानी अध्यापक पात्रता परीक्षा होने के बाद दसवीं तक के अध्यापक इस परीक्षा को पास करने के बाद योग्यता अनुसार अध्यापक बन सकेंगे। इस शिक्षा नीति में शिक्षकों के द्वारा किये जाने वाले गैर शैक्षणिक कार्य जिनसे शिक्षा की गुणवत्ता में कमी देखी गई हैं इससे शिक्षकों को मुक्त किया जाएगा।
- उच्च शिक्षा में सकल नामांकन को वर्तमान 26.5% से बढ़ाकर 50% का लक्ष्य रखा है। साथ ही 3.50 करोड़ नई सीटे जोड़ी जाएगी। उच्च शिक्षा हेतु एक रेगुलेटर तथा समान का प्रावधान किया गया है।
- स्नातक को 4 वर्ष तथा स्नातकोत्तर को 1 वर्ष किया जाएगा। उसके उपरांत अनुसंधान करने वाले विद्यार्थियों के लिए राह आसान की गई है तथा स्नातक बीच में छोड़ कर जाने वाले विद्यार्थियों के लिए भी प्रावधान किया गया है, कि एक वर्ष बाद उन्हें प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा तथा 2 वर्ष स्नातक करने के बाद डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा तथा अंतिम वर्ष के बाद डिग्री प्रदान की जाएगी।
- नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षक बनने के लिए एग्जाम के साथ-साथ प्रदर्शन (डेमो) तथा साक्षात्कार का भी प्रावधान किया गया।

<u>नई शिक्षा नीति के लिए प्रतिक्रियाएँ :</u>

- नई शिक्षा नीति पर बुद्धिजीवी वर्ग ने स्वागत किया तथा देश के लिए सबसे जरुरी कदम बताया। कुछ संस्थानों ने भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों के कैम्पस स्थापित करने का विरोध किया था।
- इस नीति से संबंधित दूसरा प्रमुख मुद्दा मातृभाषा को लेकर है, नीति के समीक्षक बतातें हैं कि पहले भी शिक्षा नीतियों में मातृभाषा पर बल देने की बात कही गई थी। परन्तु धरातल पर क्रियान्वित नहीं हो पाई तो सवाल यह है कि क्या नई शिक्षा नीति के लिए किए गये प्रावधान के अनुरुप मातृभाषा को बढ़ावा देने में सफल हो पाएंगे इसका दूसरा कारण मातृभाषा में शिक्षण सामग्री की उपलब्धता का न होना भी है।

  आगे चलकर जब विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में हिंदी तथा इंग्लिश में फेस करने हैं तो मातृभाषा कहा तक उपयोगी है।
- इस शिक्षा नीति के जारी होते ही दक्षिणी राज्यों के कुछ संगठनों ने उन पर हिंदी थोपे जाने के आरोप लगाए। परंतु उल्लेखनीय है कि नीति में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है।

यह शिक्षा नीति बदलते समय के अनुसार ज्ञान कौशल तथा मूल्यों का सामंजस्य स्थापित करने में अहम भूमिका अदा करेगी। आज हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में एक बडे क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता है ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में सूधार तथा उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों की सुनिश्चित की जा सके।

इस दिशा में नई शिक्षा नीति एक कदम हैं।



प्रकाश चंद्र झा
उप महाप्रबंधक (जनि-कार्य)

संक्रमण की त्रासदी

कैसे - कैसे दुख झेले हैं,
लोगों ने क्या-क्या नहीं सहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।1।।

जिसने है अपनों को खोया,
होकर विकल फूट-फूट रोया।
टूटे ख्वाब जो भी संजोया,
आंखें तब से नींद न सोया।

कितनों के सर से उठा है साया,
दुआ दवा कुछ काम ना आया।
खत्म हुए सब जमा कमाया,
दुनिया लगने लगा पराया।

उजड़ा बिखरा चमन पड़ा है,
कुछ दिन पहले था जो लहलहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।2।।

बेटा जवान संक्रमित हुआ,
विधवा मां लेकर अस्पताल गई।
बिस्तर कोई नहीं है खाली,
लगे हैं कतार में लोग कई।

बेटे की सांसें उखड़ी जाती,
माता क्रंदन करती जाती है।
कोई बचा लो लाल को मेरे,
सबसे विनती वंदन करती जाती है।

जिगर का टुकड़ा चिरमौन हुआ,
अब जीवन में क्या बचा रहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।3।।

जब सुहाग खतरे में आया,
जीवन भीख साँस की मांग रही।
गहने जेवर सब गिरवी रखकर,
सेवा में तत्पर एक टांग रही।

जीवन भर था साथ निभाना,
सात दिनों में ही साथ छूट गया।
पति के सांसो की जपती माला,
जपते जपते ही टूट गया।

अरमानों के जो महल बने थे,
आंखों के आगे है पड़ा ढहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।4।।

दूसरी लहर कहर बन आई,
कैसे-कैसे मंजर आम हुए।
ऑक्सीजन और दवा की शीशी,
पैसे वालों में नीलाम हुए।

बिस्तर मिलने की हुई दलाली,
दवा का काला बाजार हुआ।
अपनों की जान बचाने खातिर,
आंचल भी लाचार हुआ।

मजबूरी का उठा फायदा,
नराधम रहे लगाते कहकहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।5।।

क्रुर नियति का चक्र था ऐसा,
संक्रमण का शिकार हुआ।
बड़ी मुश्किल से बिस्तर मिली,
जब बहुत अधिक बीमार हुआ।

रोग छूत का सभी जानते,
अपनों से दूर एकांत हुआ।
कब चल बसा किसी को पता नहीं,
अस्पताल के कोने में देहांत हुआ।

देख श्मसान की लम्बी कतारें,
लाश गंगा में ही दिया बहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।6।।

बच्चे कई अनाथ हो गए,
कितनों पर विषम आघात हुआ।
कमाने वाला ही चल बसा,
जीवन में जैसे वज्रपात हुआ।

जीवन नैया फसी भंवर में,
और हाथ कोई पतवार नहीं।
सहयोग समाज का भी मिले,
केवल अकेली सरकार नहीं।

जीवन की गाड़ी फिर चल निकले,
है जो कुछ पास अब रहा सहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा। ।।7।।

कैसे-कैसे दुख झेले हैं,
लोगों ने क्या-क्या नहीं सहा।
कुछ तो दुनिया ने सुनी नहीं,
कुछ खुद ही उसने नहीं कहा।



प्रसाद कुलकर्णी
व्यवस्थापन विकास केंद्र

व्यवस्थापन विकास केंद्र - एमडीएल की ज्ञानगंगा

व्यवस्थापन विकास केंद्र (एमडीसी) एमडीएल कर्मचारियों के लिए ऊर्जा एवं सूचना का स्रोत है। यह एमडीएल के ज्ञान का भंडार नई तकनीकों, नीतियों, परिवर्तनों, ज्ञान और सूचनाओं से अद्यतन रखता है। विश्व की गति एवं प्रवाह के साथ अद्यतन एवं समकालिन रखने के लिए यह एमडीएल कर्मचारियों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रुप से आयोजित करता है। इसमें कर्मचारियों के लिए विविध कौशल विकास और प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन शामिल हैं। इसी तरह, विभिन्न स्तरों के अधिकारियों के लिए भी समय-समय पर टीम बिल्डिंग तथा नेतृत्व संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।



उद्योग में रणनीतिक अभिमुखी विकसित करने के उद्देश्य से और आधुनिक प्रौद्योगिकी विकास के साथ उन्हें अपडेट रखने हेतु निदेशक मंडल के लिए स्ट्रैटेजिक कॉनक्लेव आयोजित की जाती है। अधिकारियों में नैतिक मूल्यों को विकसित करने और कंपनी के लिए सुशासन निश्चित करने के लिए सतर्कता निवारक पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।



नारी सशक्तिकरण और उनके कल्याण के लिए एमडीएल की पहल के अनुरुप, "कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम" (Prevention of Sexual Harassment at Workplaces - PoSH), नेतृत्व विकास और कार्य जीवन संतुलन पर जागरुकता कार्यक्रम एमडीसी संचालित करता है। स्वदेशीकरण / आत्मनिर्भर भारत और व्यापार वृद्धि में सुविधा बढ़ाने के लिए एमडीएल ने हमेशा पहल की है। इस संबंध में, एमडीएल कर्मचारियों में जागरुकता बढ़ाने के लिए और नए विचारों का विकास करने के लिए बौद्धिक संपदा अधिकारों पर प्रशिक्षण दिया जाता है।



इसी तरह, व्यापार करने की सुविधा में वृद्धि की दृष्टी से, जीईएम (GeM) द्वारा वाणिज्यिक प्रणाली और सार्वजनिक क्रय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिकारियों के लिए भी आयोजित किया जाता है। इसके अतिरिक्त अधिकारियों के लिए एचएसई और गुणवत्ता ऑडिट के संबंध में प्रमाणन पाठ्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।



भविष्य में, कर्मचारियों के लिए कौशल विकास पर अधिक कस्टमाईज कार्यक्रमों की योजना बनाई जा रही है, जिसमें सॉफ्ट स्किल के साथ-साथ उनके तकनीकी कौशल को बढाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इसी तरह, आऊट बाउंड कार्यक्रमों की योजना सभी स्तरों पर कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए बनाई जा रही है।

सारांश रुप से, एमडीएल का व्यवस्थापन विकास केंद्र सही मायने में एमडीएल की ज्ञानगंगा का काम कर रहा है।

यह एमडीएल के ज्ञान भंडार को नई तकनीकों, नीतियों, परिवर्तनों, ज्ञान और सूचनाओं से अद्यतन रखता है।



इंसानियत

काले खान
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, रक्षा उत्पादन विभाग

इंसानियत/मानवता का शाब्दिक अर्थ समस्त मानवता, मनुष्यता, सभ्यता, शिष्टता, तमीजदारी एवं आदमियत से है, इंसान के लिए दिल में सहानुभूति, दया, करुणा एवं प्रेम रखना ही इंसानियत है। इंसानियत के बारे में उर्दू के मशहूर शायर/लेखक **अजीज मातवी** ने क्या खूब कहा है :-

"जिस की अदा पे हो इंसानियत को नाज
मिल जाए काश ऐसा बशर ढूंढते हैं हम"

ऊपरवाले ने इस पृथ्वी पर इंसान को पैदा किया सिर्फ एक इंसान के रुप में, न कि एक हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई या पारसी के रुप में। इंसान जिस धर्म के मानने वाले के घर में जन्म लेता है, वह उसी धर्म का कहलाया जाता है। इस दुनिया के लोगों ने इंसान को विभिन्न प्रकार की परम्पराओं, सभ्यताओं, रुढ़ियों एवं रीति-रिवाजों की जंजीरों में जकड़ कर रख दिया है। मानव जब इस संसार में जन्म लेता है, उस समय वह इस दुनिया के सभी रीति-रिवाजों, छल, कपट, फरेब, ईर्ष्या, घृणा एवं द्वेष से अनजान होता है, इसी कारण नवजात शिशु को फरिश्ता के समान बताया गया है, परंतु जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है और इस दुनिया के लोगों के संपर्क में आता है, तो उस के अंदर इस दुनिया की सभी बुराइयां घर करती हैं।

आज के इस आपाधापी युग में लोग इतने अधिक भौतिकवादी हो गए हैं कि वे इंसानियत से दिन-प्रति-दिन दूर होते जा रहे हैं। आज का मानव पैसे के पीछे दौड़ रहा है, लेकिन कोरोना जैसी महामारी ने पूरे विश्व को झकझोर कर रख दिया और इंसान को यह सोचने पर विवश कर दिया कि पैसे की कोई कीमत नहीं है। न जाने कितने लोग इस दुनिया से चले गए और उनके पास अपार धन/संपत्ति होने के बावजूद वे अपने आपको कोरोना से नहीं बचा पाए।

यदि हम शहर एवं ग्रामीण जीवन की तुलना करें, तो हम पाते हैं कि कई अर्थों में ग्रामीण जीवन में इंसानियत अभी शहरों की अपेक्षा अधिक है। शहरों में यदि सड़क पर कोई दुर्घटना हो जाती है, तो लोग अपना मोबाइल निकाल कर तुरंत फोटो खीचते हैं और फेसबुक/सोशल मीडिया पर अपलोड करने में देरी नहीं करते हैं, भीड़ में बहुत कम लोग ऐसे होते हैं, जो घायल व्यक्ति की मदद के लिए आगे आते हैं। इसके विपरीत यदि गांव में ऐसी कोई दुर्घटना होती है, तो आसपास के सभी लोग दुर्घटना स्थल की और दौड़ पड़ते हैं और घायल व्यक्ति की मदद में जुट जाते हैं।

कोरोना के संकट में पिछले वर्ष लॉकडाउन के समय जब लोग रोजी-रोटी के लिए परेशान थे, तब हमने ऐसे कई नेताओं/व्यक्तियों को लोगों की मदद करते हुए देखा, परंतु यह देख कर बड़ी निराशा हुई कि ये लोग एक किलो चावल और एक किलो आलू जरुरतमंद व्यक्ति को देते समय अपना फोटो खिंचवाकर फेसबुक पर अपलोड करना नहीं भूले। क्या यह सच्चे अर्थों में इंसानियत है ? मेरा मानना है कि यदि आप किसी की मदद करना चाहते हैं और वाकई में आप एक अच्छे इंसान हैं, तो जरुरतमंद लोगों की मदद दिखावा के लिए न करें।



इस प्रौद्योगिकीय/आधुनिक युग में इंसान तीव्र गति से तरक्की कर रहा है, परंतु इस तरक्की की लालसा में आज मानव इंसानियत से दूर होता चला जा रहा है। आज के इस युग में लोगों के पास अपने माता-पिता, बुजुर्गों एवं सगे-संबंधियों के पास बैठने तक का समय नहीं है। लोगों के दिलों से हमदर्दी नामक सय का पलायन हो रहा है। यह बड़े दुःख एवं चिंता का विषय है और हमारे संसार एवं इंसानियत के लिए खतरे की घंटी है।

ऐसा नहीं है कि लोगों में इंसानियत बिल्कुल समाप्त हो गई है, जिस दिन इस संसार में इंसानियत समाप्त हो जाएगी, उस दिन संसार का अस्तित्व खतरे में होगा और हम सबके लिए इस पृथ्वी पर शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करना असंभव हो जाएगा।

हमें इंसानियत केवल इंसान के प्रति ही नहीं रखनी चाहे, बल्कि इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों के प्रति हमें दया, सहानुभूति रखनी चाहिए। इस संबंध में मैं इंसानियत के बारे में कुछ महान दार्शनिकों, व्यक्तियों के विचारों का उल्लेख करना चाहूंगा :-

"Be kind to all creatures" - Buddha

I) "Politeness is the flower of humanity" - Joseph Joubert

II) You must not lose faith in humanity" - Mahatma Gandhi

III) "Who are we as human beings if we ignore the suffering of others" - Anonymous

IV) "Our human compassion binds us the one to the other - not in pity or patronizingly but as human beings who have learnt how to turn our common suffering into hope for the future" - Nelson Mandela

V) "Love and compassion are necessities, not luxuries. Without them, humanity cannot survive." - Dalai Lama

मेरा ऐसा मानना है कि इस दुनिया में जिस प्रकार से अंधकार को अंधकार से नहीं मिटाया जा सकता है, इसे मिटाने के लिए प्रकाश जरुरी है, उसी प्रकार इस दुनिया में नफरत को नफरत से नहीं मिटाया जा सकता है, इसे मिटाने के लिए प्रेम जरुरी है। जब हम एक दूसरे से बिना किसी जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र या भाषा का भेदभाव किए नफरत की जगह प्रेम करने लगेंगे, तो यह संसार वास्तव में स्वर्ग बन जाएगा। हमें एक अच्छा इंसान बनने के लिए सबसे पहले अपने को बदलना होगा और हमें अपने को बदलने के लिए जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र या भाषा का भेदभाव एवं नफरत की संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर इंसानियत को अपनाना होगा।

आज हम समाचार चैनलों पर न जाने कितनी बार इंसानियत को शर्मशार करने वाला समाचार देखते हैं, और हम क्षण भर के लिए अफसोस करने के बाद उस खबर को भूल जाते हैं, परंतु इसी के साथ हम यह भी भूल जाते हैं कि आज यह किसी दूसरे इंसान के साथ हो रहा है, यदि यह हमारे साथ हो, तो हम पर क्या बीतेगी .... ?

अंत में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि एक अच्छा मनुष्य बनने के लिए सबसे पहले मानवता से प्रेम करना सीखो। यदि आपके दिल में इंसानियत नाम की कोई चीज नहीं है, तो आप एक अच्छे इंसान कभी नहीं कहला सकते। यदि इस दुनिया में सभीं लोग, सभी राष्ट्र एक दूसरे के प्रति प्रेम, दया, सहानुभूति रखना आरंभ कर देंगे, तो इस संसार से नफरत, घृणा, संघर्ष, कलह जैसी सभी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी और हमारी पृथ्वी सच्चे अर्थों में रहने के लायक बन जाएगी।





कु. लक्ष्मी सिमनलाल आर्य
फिजियोथेरेपिस्ट (बीपीटी)

ब्लैक फंगस

**क्या होता है ब्लैक फंगस ? इसके लक्षण और उपचार क्या है ?
ब्लैक फंगस से बचाने में फिजियोथेरेपी काफी कारगर होती है ।**

जानिये

कोरोना की दूसरी लहर के साथ ही हम सभी के लिए एक नई महामारी ने चुनौतियां बढ़ा दी थी । इस नई महामारी का नाम था ब्लैक फंगस । पिछले दिनों हम सभी ब्लैक फंगस संक्रमण का नाम सुन रहे थे । देश में ब्लैक फंगस के बहुत ज्यादा मामले सामने आए थे ।

ब्लैक फंगस खासकर कोरोना वायरस से ठीक हुए लोगों में साइड इफेक्ट्स के रुप में सामने आया था । विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना संक्रमण के समय हाई रिस्क वाली दवाइयों (स्टेरॉयड) के उपयोग से यह संक्रमण फैला था । स्टेरॉयड में आँखों की रोशनी चली जाती है, कई मामलों में तो व्यक्ति की मृत्यु तक होती है ।

ऐसे में हम सभी के लिए यह जानना जरुरी है कि आखिर ब्लैक फंगस क्या होता है ? ब्लैक फंगस के लक्षण क्या है ?



ब्लैक फंगस से किन लोगों को अधिक खतरा है और ब्लैक फंगस का उपचार क्या है ?

ब्लैक फंगस एक दुर्लभ फंगस इन्फेक्शन है जो तेजी से नाक, आंख, दिमाग व साइनस में फैलता है।

यह म्यूकोरमाइकोसिस के रुप में जाने वाले मोल्डों के समूह के कारण होता है। विशेषज्ञों के अनुसार ब्लैक फंगस पहले से ही वातावरण में मौजूद है, लेकिन कोरोना संक्रमण के कारण कमजोर इम्यून सिस्टम के चलते यह लोगों को अपना शिकार बनाता है।

लक्षण

आंखों में सूजन, आंखे लाल होना, आंखे खोलने व बंद करने में परेशानी, डबल विजन, दिखाई कम या नहीं दिखना।

- नाक बंद होना व नाक से बदबूदार पानी/खून आना।
- चेहरे पर सूजन / सर दर्द / सुनापन होना।
- दांतों में दर्द, चबाने में परेशानी, उल्टी व खांसने में खून आना।
- बुखार, खांसी, साँस लेने में तकलीफ, खून की उल्टी होना आदि।

बचाव के तरीके

- ब्लड शुगर को कंट्रोल में रखना चाहिए।
- कोविड के इलाज में स्टेरॉयड का उचित उपयोग।
- ऑक्सीजन ह्यूमिडिफायर का उचित उपयोग।
- धूल वाली जगह पर मास्क पहनकर रखें।
- मिट्टी, काई और खाद के सम्पर्क में आने से बचे।

ब्लैक फंगस से किन लोगों को खतरा

- कोविड-19 से संक्रमित व ठीक हुए लोग।
- अनियंत्रित डायबिटीज वाले मरीज।
- जिनके इलाज में अत्यधिक स्टेरॉयड का उपयोग हुआ हो।
- एड्स, कैंसर, किडनी की दवाइयां लेने वाले रोगी।

ब्लैक फंगस का उपचार

कोविड-19 से संक्रमित व ठीक हुए लोग, अनियंत्रित डायबिटीज वाले मरीज, जिनके इलाज में अत्यधिक स्टेरॉयड का उपयोग हुआ हो, एड्स, कैंसर, किडनी की दवाइयां लेने वाले रोगी आदि लोगों को फिजियोथेरेपिस्ट की सहायता से ब्लैक फंगस का उपचार करवाना चाहिए।

ब्लैक फंगस के मामले में एंटी - फंगल दवा एम्फोटेरिसीन-बी का उपयोग किया जा रहा है। लेकिन इसे चिकित्सकीय सलाह से लेना चाहिए। अगर इस तरह के कोई लक्षण नजर आते हो तो चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

ब्लैक फंगस के मामले में यह भी जानना जरुरी हो जाता है कि अगर हम प्राइवेट हॉस्पीटल में इलाज करना चाहते हैं तो कौन-सा हॉस्पीटल अच्छा रहेगा।

अब हर जिले में जिला अस्पताल में भी फिजियोथेरेपिस्ट तैनात किए गए हैं। यह ब्लैक फंगस जैसे पोस्ट कोविड इफेक्ट से बचाने और लोगों के चेस्ट और फेफड़ों को मजबूती देकर ऑक्सीजन लेवल बढ़ाने में भी मददगार साबित करता है। फिजियोथेरेपिस्ट विभिन्न व्यायाम करने की जानकारी देता है।

देश में कई संक्रमित मरीजों का इलाज फिजियोथेरेपी के जरिए हो चुका है। 60 फीसद के करीब ऑक्सीजन लेवल के मरीज का एसपीओ-2 फिजियोथेरेपी की मदद से 90 फीसद प्लस तक पहुंचा है।

फिजियोथेरेपी के साथ पोषण भी जरुरी :

पोस्ट कोविड रिकवरी के लिए सही उपचार, फिजियोथेरेपी के साथ ही पोषण युक्त डाइट बेहद जरुरी है। पहले से ही न्यूरो संबंधी बीमारी से ग्रसित लोग भी तेजी से संक्रमण की चपेट में आ रहे हैं। ऐसे मरीजों को पोस्ट कोविड रिकवरी प्रोग्राम की और जरुरत है क्योंकि संक्रमण के कारण उनमें पहले की बीमारियों का फिर से उत्पन्न होने या गंभीर होने का खतरा और अधिक बढ़ जाता है। फिजियोथेरेपी के जरिए कोविड एवं ब्लैक फंगस मरीजों का इलाज कराया जा सकता है।



ट्रैकिंग : रोमांचकपूर्ण भ्रमण

अमित कुमार
प्रबंधक, क्रय विभाग

"नौकरी से आपको पैसे मिलेंगे लेकिन एडवेंचर से आपको आनंद मिलेगा" - जेम्स लीन बैटी

विकिपीडिया के अनुसार ट्रैकिंग की परिभाषा है - ट्रैकिंग एक पैदल चलने का प्रकार है, जो नए स्थलों की खोज करने और आनंद लेने के साथ किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया जाता है। यह आमतौर पर अपेक्षाकृत अच्छी जगह या स्थान पर घूमने जाने से है।

ट्रैकिंग का शाब्दिक अर्थ है 'लंबी यात्रा पर जाना, यह आमतौर पर पैदल चलने से है।' सामान्यतः यह बहुत ही मजेदार यात्रा होती है जहां आप छुट्टियों में जा सकते है। यह पिकनिक की तरह मजेदार यात्रा होती है जिसे आप पहाड़ो में जाकर कर सकते है। आप गेम खेल सकते हैं, या आपको जो लगे, वो कर सकते हैं। यह सॉफ्ट-एडवेंचर स्पोर्ट होने के चलते, अच्छे शरीर वाला कोई भी व्यक्ति ट्रैकिंग पर जा सकता है। ट्रैकिंग शुरु करने के लिए, दिन की शुरुआत हाइक से करनी चाहिए, फिर शाम तक अपने निवास पर पहुंचने तक करना चाहिए। अपनी क्षमता और योग्यता को जानने के लिए अलग-अलग दिन में अलग-अलग स्थानों पर ट्रेक करना अपेक्षाकृत आसान होता है। आप अनुभवी ट्रेकर के साथ, पहाड़ो पर घूम सकते हैं, एडवेंचर क्लब जॉइन कर सकते हैं, या किसी ट्रैवल कंपनी के साथ जुड़ सकते हैं। ट्रैकिंग का वास्तविक अर्थ है कई दिनों के लिए अपने घर से बाहर जाना और अपनी पीठ पर अपने इक्यूपमेंट के साथ निकलना और आश्रय के लिए तंबू में सोना है।



ट्रैक के लिए जाना रोमांचकपूर्ण होता है और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण होता है वहाँ जाने के लिए पहले योजना करना। ट्रैकिंग के लिए महत्वपूर्ण नियम होता है 'पैक लाइट' अर्थात हलके चीजों की पैकिंग करना। यह कहने से ज्यादा करना आसान लगता है, इसके लिए अच्छी तैयारी और स्पष्ट सोच-विचार करने की आवश्यकता है। आपको केवल आवश्यक सामान ले जाना चाहिए, जैसे पानी की बोतल, अतिरिक्त भोजन, प्राथमिक चिकित्सा किट, नेविगेशन उपकरण जैसे नक्शे या कंपास, कपड़े और भी बहुत कुछ ऐसी चीजें जिनके बिना आप अपना ट्रैक पूरा नहीं कर पाएंगे।

ट्रैकिंग के कई लाभ हैं जैसे इससे आपके शरीर की सेहत में काफी सुधार होता है। कई घंटे ट्रेल पर बिताने के बाद, बड़े पत्थरों पर चढ़ाई करना, रॉक आरोहण और आरोही पहाड़ियों पर चढ़ने से आपके पूरे शरीर की कसरत होती है, जिससे आपकी ताकत, फुर्ती और हृद से संबंधी फ़िटनेस में सुधार होता है। नियमित ट्रेकिंग करने से हृदय शक्ति बढ़ सकती है क्योंकि ट्रेकिंग के दौरान शरीर में ऑक्सिजन की जरुरत को निरंतर बनाए रखने के लिए हृदय को अधिक पंप करना होता है। इससे मांसपेशियों और मस्तिष्क में

रक्तप्रवाह बढ़ता है, सर्क्युलेटरी सिस्टम और श्वसन प्रणाली के स्वास्थ्य में सुधार होता है। ट्रेकिंग करते समय, आप अपने समूह के सदस्यों के साथ समय बिताने, उन्हें प्रेरित करने और एक-दूसरे को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ट्रेल्स पर नए लोगों को मिलना, पूरी तरह अलग बैकग्राउंड के लोगों के साथ घूमना, इससे हमें सीख मिलेगी की हमें टीम के साथ कैसे सहयोग करना चाहिए, कार्य करना चाहिए और कैसे जवाब देना चाहिए। ट्रेकिंग के फायदे केवल आपके शारीरिक, मानसिक या सामाजिक स्वास्थ्य के लिए ही लागू नहीं होते बल्कि इससे आपके प्रबंधन कौशल में लाभ हो सकता है। जब आप ट्रेक के लिए योजना बनाते हैं, तो आप अपने आपको ट्रेनिंग के लक्ष्य निर्धारित करने, ट्रेक की योजना बनाना, अपना शेड्यूल बनाना, लक्ष्य निर्धारित करना, अपनी मानसिक ताकत को विकसित करना और वातावरण के बदलाव के अनुसार अपने आप में बदलाव करना।

ट्रेकिंग से हम तरोताजा, स्वस्थ और मजबूत रहते हैं। यह जीवन की सुस्ती और ऊब से बचाता है। इससे अच्छा तनावमुक्त करने और रोजमर्रा की चिंताओं से छुटकारा पाने का कोई अन्य बेहतर तरीका नहीं है, कोई व्यक्ति प्रकृति की सभी सुंदरता और उपहारों का आनंद लेता है। जब आप ट्रेकिंग कर रहे होते हैं, यह प्रकृति के साथ अंतर्मिलन का क्षण होता है। यह हमें एक महान शिक्षक, आरोग्य साधक और कंसोलर के रुप में प्रतीत होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात समझना आवश्यक है कि हम केवल बुनियादी जरुरतों के आधार पर ही खूश कैसे हो सकते हैं।

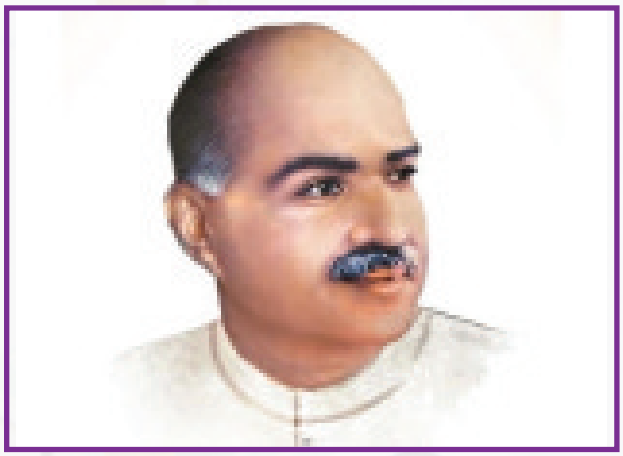
घर के अंदर दिन की निरंतर दिनचर्या के साथ जीवन बिताने के लिए जीवन बहुत छोटा है। दुनिया के अजूबों को देखने के लिए दुनिया में और भी खूबसूरत बहुत सारी चीजें हैं। हम केवल एक बार जीते हैं, इसलिए सुनिश्चित कर लें कि आप प्रकृति से जुड़े रहें और न थमने वाले खोज के साथ जीवन में आनंद उठाते रहें।





जसबिंदर सिंह
प्रबंधक (पूर्व खंड - योजना)

श्यामा प्रसाद मुखर्जी



श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म कलकत्ता के भवानीपुर में 06 जुलाई 1901 को हुआ था। उनका बचपन का नाम 'बेबी' था। उनके पिता आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे न्यायधीश एवं न्यायबिंदू, गणितज्ञ, विद्वान, भाषाविद और शिक्षाविद थे। श्यामा प्रसाद मुखर्जी की विचारधारा को जिस प्रकार सर आशुतोष ने पोषित और पल्लवित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया, उसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। श्यामा प्रसाद को भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का ज्ञान एवं राष्ट्रीय प्रेम की भावना उनके परदादा, दादा एवं पिता से विरासत में मिली थी।

मित्र इंस्टीट्यूशन, श्यामा प्रसाद का प्रथम विद्यालय था, जो एक ऐसी संस्था थी, जहाँ आधुनिक शिक्षा और भारतीय संस्कृति व संस्कारों का आदर्श समन्वय था। श्यामा प्रसाद को जासूसी उपन्यास पढ़ने का बड़ा शौक था। उन्होंने सर आर्थर कानन डायल का साहित्य पढ़ डाला था।

हमें अशिक्षित समाज की संरचना नहीं करनी, हमें उन्नति के पथ पर निडरता और आत्मविश्वास के साथ बढ़ना है और सदैव याद रखना है, स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

श्यामा प्रसाद के उर्पयुक्त विचार, एक बहुत ही सुलझे हुए समझदार व्यक्ति के विचार प्रतीत होते हैं।

शेक्सपियर से उन्होंने मानवीय चरित्रों व संबंधो का मूल्यांकन करना सीखा तो वड्र्सवर्थ की कण-कण में भगवान की परिकल्पना ने उनमें भारत के वेदांत दर्शन की याद ताजा कर दी।

दिलचस्प है कि रमाप्रसाद (बड़े भाई) और श्यामा प्रसाद दोनों ही सुभाष चंद्र के अच्छे मित्र थे। हालाँकि, 1916 में एक अंग्रेज अध्यापक के खिलाफ प्रदर्शन के लिए आशुतोष ने दंडित भी किया था।

श्यामा प्रसाद के व्यक्तित्व निर्माण में साहित्य का भी अभूतपूर्व योगदान रहा। श्यामा प्रसाद पर विलियम कैरी का बहुत अधिक प्रभाव था। उन्होंने बंगाल के निर्धन कृषक समुदाय के बच्चों के लिए 'मदनाबती' में पहला मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने वाला विद्यालय खोला था। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बीच सम्बंध बहुत ही अच्छे थे। 1934 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बनने के बाद वे गुरुदेव के विचारों को विभिन्न आयोजनों पर व्यक्त करते थे। श्यामा प्रसाद ने चिकित्यसीय शिक्षा को बढ़ावा दिया।

श्यामा प्रसाद ने कुलपति बनते ही माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन का मुद्दा उठाया और दूसरा, विद्यार्थी को कम से कम एक व्यावसायिक विषय पढ़ना होगा तभी दसवीं का सर्टिफिकेट मान्य होगा। यह उनकी सोच युवाओं के रोजगार के प्रति दूरदर्शिता का परिचय देती है।

परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन भी एक अमूल योगदान है। उन्होंने मौखिक परीक्षा पर बल दिया दूसरा, विद्यार्थियों के टाइम टेबल में व्याख्यानों की संख्या कम करके, ट्यूटोरियल की संख्या बढ़ाई। इससे शिक्षक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान अधिक देगा।



श्यामा प्रसाद का मानना था कि प्रशिक्षित अध्यापक संस्थान की बहुमूल्य संपत्ति तथा संस्थान का केंद्रबिंदु होता है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा पर भी ज़ोर दिया। मातृभाषा के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के अध्ययन एवं कैसे अन्य भाषाएं पाठ्यक्रम प्रणाली का हिस्सा बन सकती है उस पर जोर दिया। उन्होंने अनेक क्लबों की स्थापना की और छात्र कल्याण बोर्ड की स्थापना की। श्यामा प्रसाद अनेक संस्थानों, अनेक बोर्ड के स्थापना में सदस्य रहें, उदाहरण के लिए - दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, इंटर यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस, साहा इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स, महाबोधी सोसाइटी, साहित्य अकादमी, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी का गठन किया था।

डॉ. मुखर्जी एक अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी, एक उत्कृष्ट शिक्षाबिंदू थे। उनकी सोच दूरगामी थी तथा वर्तमान में उनके विचारों की प्रासंगिकता उन्हें सर्वकालिक व्यक्तित्वों की श्रेणी में ला खड़ा करती है। 23 जून 1953 को भारत की अखंड और अक्षुण की लड़ाई लड़ते हुए उनकी मृत्यु हुई। अपने जीवन और शिक्षाओं के माध्यम से शिक्षकों और शिक्षार्थी को जो अभूतपूर्व प्रेरणा प्रदान की है, वह हमारी विरासत है, जो अपने में सामायिक मूल्यों को संजोए हुए है, जिसकी आवश्यकता प्रत्येक देशकाल में होती रहेगी।





ऐ वतन तेरे लिए

एच एस शेख
आफिस – स्टाफ

एक तरफ भगत सिंह को फांसी तो दूसरी ओर चंद्रशेखर आजाद के साथ पुलिस मुठभेड़। अंग्रेजों के इस अत्याचार से देश भर के क्रांतिकारियों में निराशा छा गई थी। इससे पार पाने के लिए 1932 में क्रांतिकारी शंभूनाथ आजाद ने अमृतसर में एक गुप्त बैठक की। बैठक में क्रांतिकारी गोविंदराम वर्मा, रोशनलाल और बंता सिंह भी थे। तय हुआ कि अब आंदोलन दक्षिण भारत तक होगा। प्लान बना कि मद्रास पहुंचकर वहां के गवर्नर और वहां आए बंगाल के गर्वनर पर बम गिराया जाएगा। मगर जब सब मद्रास पहुंचे, तो पैसे खत्म हुए थे। कहीं से पैसे मंगाए, मगर वे भी न आ सके।



अब क्रांतिकारियों ने ऊटी बैंक को लूटने की योजना बनाई। अप्रैल 1933 में जब ये लोग बैंक लूटने के लिए इकट्ठा हो रहे थे, क्रांतिकारी नित्यानंद और खुशीराम मेहता को अंग्रेजों ने पकड़ लिया और उन्हें बैंक लूटने का प्लान पता चल गया। अब सभी ने जो भी सामग्री उपलब्ध थी, उसी से बम बनाने का फैसला किया। बम बनाया गया। बड़ा ही भीषण बम था। मगर जब क्रांतिकारी रोशनलाल समुद्र किनारे उसे टेस्ट करने जा रहे थे तो उनका पैर फिसल गया और बम फट गया। रोशनलाल वहीं शहीद हो गए। अंग्रेजों को बम का भी पता चल गया था और अब अंग्रेजों ने अपने जासूस हर जगह फैला दिए थे।

आखिरकार एक दिन अंग्रेज इनके घर पहुंच ही गए। घर की मकान मालकिन ने मुखबिरी की थी। पुलिस ने दरवाजा खटखटाया तो सारे वीर छत पर आ गए। पुलिस ने डाकू होने की अफवाह भी उड़ा दी तो आसपास मौजूद लोग भी इन पर ईंट पत्थर फेंकने लगे। क्रांतिकारियों ने हवाई फायर करके भीड़ तितर-बितर की मगर मुठभेड़ रात तक चलती रही। गोविंदराम वर्मा शहीद हुए और पुलिस ने शंभूनाथ आजाद समेत बाकी सारे क्रांतिकारियों को पकड़ लिया था। जब मद्रास की जनता को इनका पता चला तो पूरा मद्रास इन्हें देखने को उमड़ पड़ा था। भारत के आजादी के आंदोलन में यह घटना मद्रास बम केस के नाम से अमर है।





मोहन नारायण कारेकर
कार्यालय अधीक्षक

दूर देश में गांधी जी

बात सन 1948 की है। सीजर शावेज की उम्र उस समय 21 वर्ष थी। वह कैलिफोर्निया के बड़े फूल बागान में मजदूर थे। वहां मजदूरों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता था। मजदूरों के पास इस शोषण और अपमान से मुक्ति का काई उपाय नहीं था। एक दिन सीजर शावेज ने समाचार सुना कि महात्मा गांधी ने बिना शस्त्र उठाए ब्रिटेन जैसे विशाल साम्राज्य को हराकर भारत को आजाद करा लिया। उन्हें इस पर विश्वास ही नहीं हुआ। सच्चाई जानने के लिए उनका मन बेचैन रहने लगा।



वह अब इस बात की चर्चा मजदूर साथियों से करते कि बिना शस्त्र के कोई लड़ाई कैसे लड़ी जा सकती है। महात्मा गांधी ने भारत में यह लड़ाई कैसे लड़ी। उनकी बेचैनी के फलस्वरुप आखिर एक दिन किसी व्यक्ति ने उन्हें बता ही दिया कि अगर वह महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पढ़ सकें, तो उसमें उन्होंने सब कुछ लिखा है। आठवीं में पढ़ते समय जातीय हिंसा और भेदभाव से शावेज की भावनाएं इतनी आहत हुई थीं कि उन्होंने स्कूल की पढ़ाई छोड़ दी थी, फिर भी गांधी जी की आत्मकथा पढ़ने के लिए यह पढ़ाई पर्याप्त थी।



गांधी जी की आत्मकथा पढ़ते हुए वह सत्याग्रह, अहिंसा, असहयोग, अनशन और सविनय अवज्ञा जैसे प्रयोगों को समझने की कोशिश करते रहे। फिर उन्होंने गांधी जी की लिखी पुस्तक 'सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका' पढ़ी। जब उनके मन में विचार साफ हुए तो उन्होंने अफ्रीका, मैक्सिको और फिनलैंड से कैलिफोर्निया आकर फूल मजदूरी करने वालों के हक की लड़ाई शुरु की। मजदूरों का संघ बनाया और जुलूस निकाले एवं बागानों का बहिष्कार किया । अवज्ञा, अनशन और उपवास के बल पर पूरे अमेरिका के लोगों का ध्यान खींचकर उन्होंने मजदूरों को बेहतर वेतन, पेंशन और बाकी सुविधाएं देने के लिए मालिकों को विवश कर दिया। यह था गांधीजी के विचारों का प्रभाव, जिसने शावेज को नया रास्ता दिखाया था।





सुश्री श्रेया तोरस्कर
डेटा इंट्री ऑपरेटर, राजभाषा

दीवान की धर्मनिष्ठा

बीकानेर के महाराज राव राय सिंह के दीवान जैन धर्मावलंबी करमचंद बछावत बड़े रईस, ईमानदार, दानवीर, कर्तव्यपरायण और देश भक्त थे। महाराज उनका बड़ा सम्मान किया करते थे। उस समय राजधानी फतेहपुर सीकरी से मुगल बादशाह अकबर शासन चला रहे थे। अकबर के कमांडर तुरसम खान ने सन 1576 में सिरोही के आसपास अनेक जैन मंदिरों को लूटा था। वह एक हजार से अधिक पुरानी, बेशकीमती मूर्तियां लूटकर फतेहपुर सीकरी लाए थे। इरादा यह था कि उन मूर्तियों को गलवाकर सोना



बादशाह को भेंट करेंगे। स्वाभाविक ही था कि बादशाह इससे खुश होते।

किसी तरह यह सूचना दीवान करमचंद को मिली तो वह बेचैन हो गए। वह तुरंत ही कई कीमती तोहफे लेकर बादशाह अकबर के दरबार को चल पड़े। दरबार में बादशाह तोहफे देखकर खुश हो गए। उन्होंने पूछा कि कैसे आना हुआ तो करमचंद बोले, 'हुजूर आपका कमांडर तूरसम खान हमारे मंदिरों से बहुत सी मूर्तियां लूटकर लाया है। हमें वे मूर्तियां चाहिए। मैं उन मूर्तियों के बराबर सोना आप को देने को तैयार हूँ।' बादशाह तुरंत राजी हो गए। इस प्रकार करमचंद सन 1582 में वे मूर्तियां बीकानेर लाए और महाराज राव राय सिंह के सहयोग से उन मूर्तियों को चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर में उत्सवपूर्वक विराजमान कराया। तब से अब तक उन सभी 1116 प्रतिमाओं का 18 बार अभिषेक कराया जा चुका है।

इसी प्रकार 1586 में फिर करमचंद को सूचना मिली कि नवरंग खान शत्रुंजय (पालीताना) तथा सौराष्ट्र के जैन मंदिरों को लूटने जा रहा है तो करमचंद जी ने तुरंत ही बादशाह के दरबार में गुहार लगाई। बादशाह ने दीवान जी की बात मानते हुए गुजरात के वजीर आजम खान को फरमान भेजा कि उस क्षेत्र के सभी जैन मंदिर करमचंद के संरक्षण मे दे दिए जाएं। हुआ भी ऐसा ही और फिर करमचंद ने पालीताना का विश्व प्रसिद्ध भव्य जैन मंदिर बनवाया। ऐसे धर्मनिष्ठ थे दीवान करमचंद बछावत।



लाल साहब सिंह
मुख्य प्रबंधक (जहाज निर्माण-पाइप शॉप)

ब्रह्मांड के रहस्य

सोच रहा हूँ बहुत दिनों से, कुछ भी समझ न आया।
कुछ सवाल मन में उठते हैं, उत्तर ढूंढ़ न पाया ।।

सुन लो सारे प्रश्न और फिर ढूंढ़ो एक प्रकाण्ड।
कैसे बना, कहाँ से आया, यह विशाल ब्रह्मांड ।।

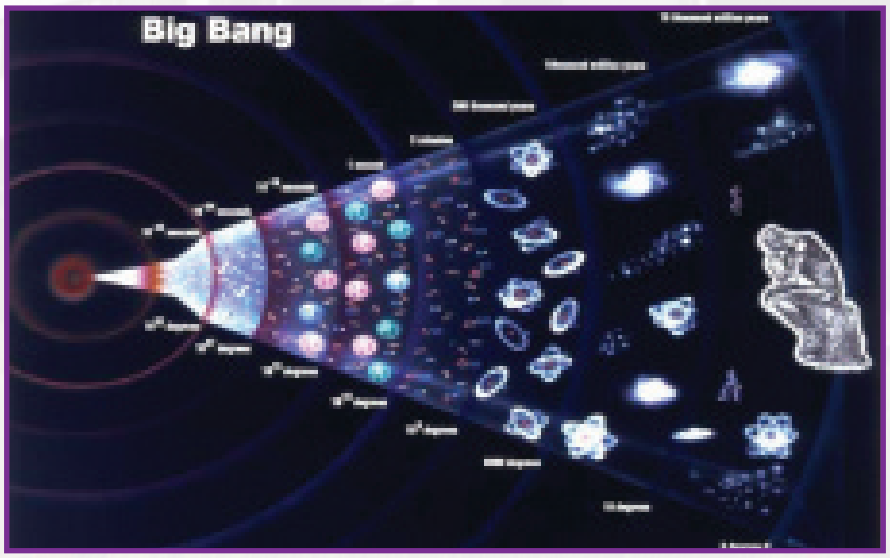
बिग-बैंग क्यों हुआ और ये समय कहाँ से आया।
हुआ अगर तो द्रव्य और स्पेस कहाँ से पाया ।।

डार्क-मैटर व डार्क-इनर्जी, अब तक देख न पाया।
कोरी यह कल्पना रह गई, इसका भेद न पाया ।।

ब्लैक-होल क्यों ब्लैक रह गया, क्या है उसमें भाई।
कौन है इसके पीछे जिसने सारी रार मचाई ।।

मंगल ग्रह क्यों लाल हो गया, किसने खींची इसकी खाल।
जल विहीन क्यों हुआ बेचारा, किसने किया इसे बेहाल ।।

ग्रह नक्षत्र व तारों से है, रिश्ता बहुत पुराना।
भेद कई बाकी हैं अब भी, यद्यपि दृश्य लुभाना ।।





फौजी का जवाब

आशीष सुभाष पंडित
स्ट्रक्चरल फैब्रिकेटर स्किल्ड, ईस्टयार्ड – हल

बात दूसरे विश्व युद्ध के समय की है। भारत को आजाद कराने के लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया था। उन्होंने जगह-जगह आजादी की लड़ाई छेड़ी थी। ऐसे ही एक लड़ाई में अंग्रेजों ने आजाद हिंद फौज की एक टुकड़ी को ऐसा घेरा, कि आखिरकार उस टुकड़ी को अंग्रेजों के आगे आत्मसमर्पण करना ही पड़ा। पकड़े गए लोगों में कर्नल स्ट्रेसी भी थे। आजाद हिंद फौज में जाने से पहले कर्नल स्ट्रेसी भारतीय चिकित्सा विभाग में ऊँचे पद पर काम करते थे।

पकड़े गए लोगों के साथ कर्नल स्ट्रेसी को भी ब्रिटिश जनरल के सामने पेश किया गया। कर्नल स्ट्रेसी को देखकर ब्रिटिश जनरल चौंका। उसने पूछा, 'आप में तो ब्रिटिश रक्त है, फिर आपने इस सेना में शामिल होना क्यों स्वीकार किया?' कर्नल स्ट्रेसी ने उड़ती सी एक निगाह अपने साथ गिरफ्तार हुए फौजियों पर डाली, फिर ब्रिटिश जनरल की आंख में आंख डालकर बोले, 'मैं भारत में पैदा हुआ हूँ और मुझे यहीं मरना है।' जनरल बोला, 'बहुत सारे ब्रिटिश यहाँ भारत में पैदा होते हैं, इसका मतलब यह तो नहीं कि वे ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ यह कहते हुए युद्ध छेड दें कि वे इसी जमीन पर पैदा हुए हैं। ऐसा तो कोई नहीं करता। फिर तुमने ऐसा क्यों किया?'

यह सुनते ही कर्नल स्ट्रेसी मुस्कुराए और बोले, 'मेरे पिता भारतीय थे और माता अंग्रेज थीं। भारत के सभी एंग्लो इंडियन खुद को भारतीय मानते हैं और इसी देश को अपनी मातृभूमि मानते हैं। मैंने जो कुछ भी किया है, अपने देश और अपने संप्रदाय की भावनाओं का सम्मान करके ही किया हैं।' यह सुनकर ब्रिटिश जनरल चुप हो गया। कम लोग ही जानते हैं कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की सेना में एक एंग्लो इंडियन बटालियन भी थी, जिसके अध्यक्ष कर्नल स्ट्रेसी थे। जो मन, वचन, कर्म और देह से भी संपूर्ण भारतीय थे।





डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक 'एचआर लीडरशिप पुरस्कार' से पुरस्कृत



डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन), माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने गवर्नन्स नाउ द्वारा 8वें सार्वजनिक क्षेत्र इकाई पुरस्कार के दौरान 'एचआर लीडरशिप पुरस्कार' प्राप्त किया है। यह पुरस्कार 29 जुलाई 2021 को डॉ. किरण बेदी, पुडुचेरी के पूर्व उप-राज्यपाल ने प्रदान किया है। डॉ. मल्लिक ने मानव संसाधन विकास पर अधिक जोर देते हुए इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य किया है, उनका मानना है कि यह कंपनी के उत्कृष्टता के लिए मानव संसाधन में उत्तरोत्तर विकास करना बहुत महत्वपूर्ण है। कंपनी के व्यावसायिक आवश्यकताओं के साथ मानव संसाधन को एक कड़ी के रुप में वह सर्वोत्तम प्रतिभा को आकर्षित करने, प्राप्त करने, विकसित करने और बनाए रखने और मानवशक्ति का सर्वोत्कृष्ट उपयोग करने पर जोर देते रहे हैं।

उन्होंने सभी मानव संसाधन नीतियों को अच्छी तरह से परिभाषित करते हुए मानव संसाधन नियमावली सुनिश्चित की है और यह सभी कर्मचारियों के जानकारी के लिए एमडीएल इंट्रानेट पोर्टल पर उपलब्ध है। नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बदलते परिवेश के अनुसार कौशल विकास हेतु, एमडीएल प्रमुख प्रबंधन संस्थानों द्वारा आयोजित मानव संसाधन के विभिन्न प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों के प्रदर्शन के माध्यम से ज्ञान और विकास पर ज़ोर दे रहा है।

डॉ. मल्लिक ने ज्ञान और नवोन्मेश के लिए एक अनुकूल वातावरण निर्माण करने का प्रयास किया है जिससे एमडीएल में निष्पादन संचालित कार्य संस्कृति का निर्माण करना है। उन्होंने पुरस्कार और सम्मान एवं आदान-प्रदान की संगठनात्मक प्रणाली को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कर्मचारियों के सर्वांगीण सुविधा का ख्याल रखते हुए स्वास्थ्य कार्य-जीवन संतुलन को हमेशा ही महत्व दिया है। इनके नेतृत्व में एमडीएल ने मानव संसाधन में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं।



विश्व आदिवासी दिवस समारोह

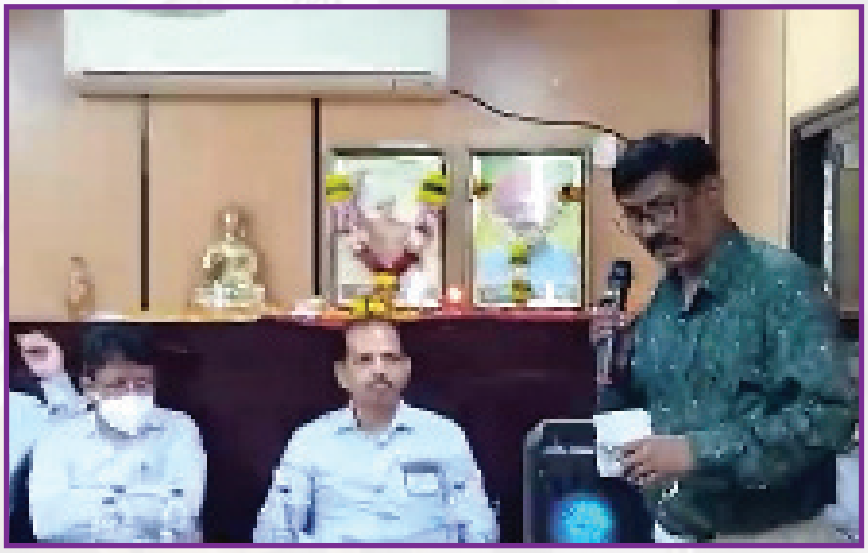
अशोक उबाळे
बार्गेनिंग कौन्सिल सदस्य (एमडीएल)

माझगांव डॉक एससी एसटी असोसिएशन के द्वारा 'विश्व आदिवासी दिवस' का आयोजन 9 अगस्त 2021 को 4:00 बजे किया गया था । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. संतोष कुमार मल्लिक (कार्यकारी निदेशक - मा. सं.), श्री अरुण कुमार चान्द (महाप्रबंधक - मा. सं. एवं क. सं.), श्री श्रीनिवास सिन्हा (अपर महाप्रबंधक - मा. सं. एवं राजभाषा), श्री एस के प्रधान (अपर महाप्रबंधक - मा. सं. - समवाय एवं एमडीसी) और श्री अरुण केदारे (उप महाप्रबंधक - मा. सं. पूर्व खंड) तथा बार्गेनिंग काउंसिल के सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित थे । आदिवासी दिवस के अवसर पर डॉ. संतोष कुमार मल्लिक ने बताया की संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1994 से प्रतिवर्ष 'विश्व आदिवासी दिवस' मनाए जाने की घोषणा की थी । उसके बाद से हर साल यह दिवस मनाया जाता है । आगे उन्होंने कहां की भारत में आज 700 से अधिक वर्गों की आदिवासी जनजातियाँ हैं, उनकी संस्कृति, परंपरा, भाषा एवं पहनावा में भिन्नता है । अब यह समुदाय शहर की ओर पलायन कर शिक्षा हासिल कर रहे हैं ।



9 अगस्त 2021 को विश्व आदिवासी दिवस समारोह में डॉ संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मा. सं.) और श्री अरुण कुमार चान्द, महाप्रबंधक (मा. सं. एवं क. सं.), अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ

श्री अरुण चान्द जी ने भी इस दिवस के उपलक्ष्य में विश्व आदिवासी दिवस का विषय 'आदिवासी लोगो को पीछे न छोड़ा जाएं और एक सामाजिक अनुबंध बनाया जाएं' का उल्लेख करते हुए उन्होंने बिरसा मुंडा के कार्यों को याद किया और जल, जंगल की लड़ाई के साथ अब आदिवासी समुदाय को शिक्षा की ओर बढ़ने के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। श्री अशोक उबाले जी ने भी इस समुदाय में वैश्वीकरण के कारण हो रहे बदलावों को देखते हुए उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं में निरंतर बदलाव करने की आवश्यकता बताते हुए इस समुदाय को मुख्य धारा में लाने की बात की है और भारत सरकार के विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने के बारे में भी जानकारी दी है।





माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियाँ



दि. 07.04.2021 को एमडीएल दौरा में आए हुए श्री जेड़वीएस प्रसाद, आईडीएएस, पीसीडीए (नेवी) को एमडीएल का शील्ड प्रदान करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ निदेशक (वित्त) श्री संजीव सिंघल



दि. 17.08.2021 को वीडीएसएम किरण देशमुख, एवीएसएम, सीडब्ल्यूपी एंड ए का एमडीएल दौरा



वीडीएसएम किरण देशमुख, एवीएसएम, सीडब्ल्यूपी एंड ए को एमडीएल की ओर से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक शील्ड प्रदान करते हुए



दि. 10.08.2021 को श्री संजय जाजू, आईएएस, अवर सचिव (रक्षा उत्पादन) का एमडीएल दौरा



श्री संजय जाजू, आईएएस, अवर सचिव (रक्षा उत्पादन) को एमडीएल का शील्ड प्रदान करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



75वें स्वतंत्रता दिवस में तिरंगा फहराते हुए एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि)

हिंदी पखवाड़ा – 2021



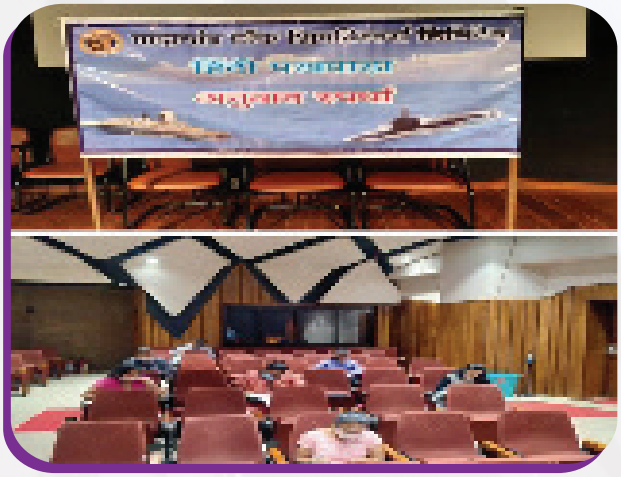
14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) दीप प्रज्वलन करते हुए



14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) एमडीएल के अधिकारीगण एवं कर्मचारियों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाते हुए



हिंदी टंकण स्पर्धा



हिंदी अनुवाद स्पर्धा



हिंदी कथा–कथन स्पर्धा



हिंदी कविता स्पर्धा

माझगांव डॉक में कार्यक्रमों की झलकियाँ



10 सितंबर 2021 को यार्ड 12653 का कील लेईंग करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



दि. 23.07.2021 को मुख्य अतिथि श्रीमती जयश्री प्रसाद द्वारा एमडीएल प्रायोजित इकाइयां क्रॉस डिसबिलिटी अर्ली आइडेंटिफिकेशन कम इंटर्वेंशन सेंटर एंड प्रीपेरटोरी स्कूल का उदघाटन करते हुए



दि. 19.08.2021 को एमडीएल के वार्षिक चिकित्सा जांच का उद्घाटन करते हुए श्री संजीव सिंघल, निदेशक (वित्त) के साथ उपस्थित, मुख्य सतर्कता अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं अन्य अधिकारीगण



दि. 24.06.2021 को एमडीएल में मुफ्त कोविड टीकाकरण अभियान में उपस्थित वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ निदेशकगण एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी



दि. 25.07.2021 को एमडीएल के आयाम स्पोर्ट्स डेक का उदघाटन करते हुए वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, भानौ (नि), अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



आयाम स्पोर्ट्स डेक में व्हीलचेयर बास्केटबॉल के फ्रेंडली मैच में उपस्थित टीम एवं अन्य एमडीएल के अधिकारीगण



16 जुलाई 2021 को पुणे में आयोजित माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के निरीक्षण में भाग लेते हुए एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण



माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के प्रतिनिधियों से प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए एमडीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, वाईस एडमिरल नारायण प्रसाद, एवीएसएम, एनएम, भानौ (नि) के साथ एमडीएल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड





राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता